स्वर्ण विहग के घाव

(कुछ पन्ने इतिहास के)

खंडकाव्य

अनिता सुधीर आख्या

विज्ञात प्रकाशन
निकट हनुमान मंदिर, संगम कॉलोनी
भापला रोड , समालखा पानीपत हरियाणा 132101
चलभाष संपर्क सूत्र
+91 9991505193 ,7015598477

•

सर्वाधिकार
अनिता सुधीर आख्या के पास

**

आवरण
शिवांग सरन

प्रथम संस्करण 2022

मूल्य

₹ 250

अंतरराष्ट्रीय मानक पुस्तक सँख्याक
978-93-91180-57-7

स्वर्ण विहग के घाव..

प्रकाशकीय लेख

देशभक्ति एक ऐसा विषय है जिसपर माँ शारदे के उपासकों की कलम जब भी चली है कुछ अद्‌भुत सृजन अवश्य किया है। ऐसा ही एक उत्कृष्ट संग्रह " स्वर्ण विहग के घाव - कुछ पन्ने इतिहास के" पाठक वर्ग के सम्मुख प्रस्तुत होने जा रहा है जिसे साहित्यकार अनिता सुधीर 'आख्या' ने अपनी सशक्त लेखनी से सजाया और सँवारा है। उनकी अद्‌भुत लेखन शैली को पढ़ने के बाद पाठक उनकी प्रशंसा किये बिना नही रह पाएंगे। आकर्षक छंदों से सुसज्जित इस संग्रह में इतिहास की अनेक घटनाओं का चित्रण है जो कि कवयित्री की परिपक्व विचारधारा को न केवल प्रस्तुत करती है अपितु उनके गहन अध्ययन और चिंतनशील व्यक्तिमत्व को भी दर्शाती है। अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए जिन छंदों का चयन किया गया है वह भी उनकी दूरदर्शिता को दर्शाता है। यह उनका तीसरा एकल संग्रह है जिसमें उन्होंने नूतन प्रयोग के माध्यम से अपने विचार पाठकों तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया है। पूर्व के संग्रह की भाँति इस संग्रह को भी पाठक वर्ग का भरपूर प्रतिसाद मिलेगा और उनका उत्साहवर्धन अग्रिम संग्रह की प्रेरणा बनेगा इन्ही शुभकामनाओं के साथ दो पंक्तियाँ समर्पित करते हुए में अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ध्वज तिरंगा हाथ लेकर,

इक हवा फिर से चलेगी।

देश हित निर्णय करेगी,

फिर न टाले से टलेगी।

संजय कौशिक 'विज्ञात'

लेखक, संपादक, प्रकाशक एवं

संस्थापक (कलम की सुगंध)

समर्पण

मैं अपना यह खंडकाव्य आजादी के सभी नायकों और वीर सेनानियों को समर्पित करती हूँ जिनके बलिदानी गाथा के कारण हम स्वतंत्र हवा में सांस ले रहे हैं।

पैरों में थीं बेड़ियाँ,फैला था संताप।
स्वर्ण विहग के घाव को,दूर करे थे आप।।
करूँ समर्पित आपको, खंडकाव्य यह आज।
अमिट अमर बलिदान की, रखे हृदय में छाप।।

वीर सपूतों को शत-शत नमन

आमुख

इतिहास और ऐतिहासिक ग्रंथ जहाँ विस्मृतियों के गर्त में समाधिस्थ हो रहे हैं। वहीं रसायन विज्ञान की एक अनुसंधानकर्तृ उन ग्रंथों से धूलि झाड़कर पुरातन काल में घटित प्रसंगों को एकत्रित करतीं हैं तथा उन्हें अपने मेधा की प्रयोगशाला में डालकर तथ्यों की परखनली से प्रामाणिकता का परीक्षण करतीं हैं। इस परीक्षण के पश्चात एक उत्पाद निकलता है- आल्हा छंद व सवैया की गुड़धानी में लिपटा हुआ आख्यान- "स्वर्ण विहग का घाव- कुछ पन्ने इतिहास के"।

इन पन्नों की रस-परिपाकता व तथ्यात्मक विवेचना देखकर राष्ट्रकवि दिनकर की ये पंक्तियाँ बरबस ही स्मरण हो आती है-

प्रियदर्शन इतिहास कंठ में आज ध्वनित हो काव्य बने।
वर्तमान की चित्रपटी पर भूतकाल संभाव्य बने।

-श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

भूतकाल की वैभव-तरंगिणी में विचरण करके सार-समिधा का संकलन, तदंतर उन तथ्य-तंतुरों का काव्यमय संयोजन- स्वर्णिम संस्कृति व इतिहास से अभिभूत मन का एक श्लाघ्य निवेदन है। तभी तो कवयित्री कह उठती हैं-

ऋषि-मुनियों की भूमि रही है,वैदिक संस्कृति का इतिहास।

सत्य सनातन धर्म हमारा, शस्त्र उठाना है उल्लास।।

लेकिन क्या इतिहास का महिमामंडन व संस्कृति का वंदन करना ही इस पुस्तक का मूल उद्देश्य है? नहीं कदापि नहीं। ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा। मुझे लगता है, इतिहास के पन्नों को खंगालते समय प्रवंचना की पीर को कवयित्री संभाल नहीं पाईं होंगी। संभव है कुछ अश्रु-मनके नयनों के मुक्ताहार भी बने होंगे। और तभी तो महाकवि वाल्मीकि की भाँति 'मा निषाद...' की तर्ज पर हृदय-पीर लेखनी से यों प्रवाहित हुई है-

तथ्य लिए परतंत्र भयानक, भारत का लिखता इतिहास।

सत्य सुना पल काँप गया अब, जीवन झेल रहा वह त्रास।।

दासता के वीभत्स लौह-शृंखलाबद्ध जन-मन के जीवन का दोष किसको दें?

क्या भाग्य को? नहीं, कदापि नहीं। विधि तो सदैव स्वतंत्र जीव का ही निर्माण करता है। फिर? यह कदाचित छल-प्रपंच-प्रवंचना से उद्भूत हुई होगी? कवयित्री इसी का सत्यापन करते हुए कहतीं हैं-

जिस थाली में ये खाते हैं, उसमें ही फिर करते छेद।

लाभ क्षणिक ही सोचें-समझें, दुश्मन को देते सब भेद।।

इन पंक्तियों में कटु यथार्थ है,गहन पीर है साथ ही एक संचेतना भी है। कुलघाती के वार से बच पाना क्या आसान होता है? नहीं न। कुठार के मुष्टिका में जड़ित काष्ठ-खंड के सहयोग से ही कुटिल कौणप सदा वृक्ष को धराशायी बनाता है जब कवयित्री कहतीं हैं-

इतिहास बदलता पलभर में, देते अपने जब आघात।

खेल घिनौना राज प्रथा का, लेकर आया झंझावात।।

दासता के बादल भारत देश के आकाश पर कुछ अधिक अवधि तक छाए रहे। इसके परित्राण के लिए सार्थक प्रयास हुए।उसी सफल प्रयत्न का प्रतिफल तो यह स्वतंत्रता है। स्वतंत्रता-संग्राम का बिगुल फूँकनेवाले तथा साहस-समीर के झकझोरे से स्वच्छ, निर्मल, स्वतंत्र गगन का निर्माण करनेवाले ऐसे समस्त प्रमुख क्रांतिवीरों को मूर्धन्य कवयित्री अपने पुस्तक में ससम्मान स्मरण करके श्रद्धा-पुष्प अर्पित करतीं हैं। एक बानगी देखें-

आदिवासी मुंडा क्रांति का करते आगाज।

आस वनरक्षक की अंत हो रानी का राज।।

आज हम आजादी का अमृत-महोत्सव मना रहे हैं। किंतु यह आजादी पूर्वजों के कठिन संघर्षों का प्रतिफल है। इसके लिए कितनी ही माताओं की गोद सूनी हुई हैं, ललनाओं की माँग उजड़ी है। वीरांगनाओं ने स्वाहुति दी है। किशोर वय क्रीड़ा का परित्याग कर कर फाँसी के फंदों के साथ सहर्ष खेले हैं। आख्या की आहत लेखनी इन संवेदनाओं को सहेजने में पीछे नहीं है-

अल्प आयु में आंदोलन कर,करी पढ़ाई अपनी बंद।

मातृभूमि पर जीवन अर्पण,गीता लेकर चूमे फंद।

आजादी के अमृत-महोत्सव में संपूर्ण देश विभिन्न उपादानों के माध्यम से

स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर रहा है। वहीं एक संवेदनशील कवयित्री द्वारा अपने काव्य-पुष्पों का अर्घ्य उन स्वातंत्र्य-वीरों को निवेदित करना, एक श्लाघ्य व स्तुत्य प्रयास है।

कुल मिलाकर यदि कहा जाए तो स्वतंत्रता-संग्राम से लेकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक की गाथा, साथ में विभाजन की त्रासदी को आत्मसात किए हुए यह खंड-काव्य एक त्वरित-संदर्भ-संधान (ready reckoner) की तरह है। मसि-श्रेष्ठ कवयित्री ने बड़े यत्न से सभी तथ्यों को काव्य-माला में पिरोया है। पुरोवाक हेतु सवैया तथा आख्यान हेतु वीर/ आल्हा छंद का चयन संदर्भ के बिल्कुल उपयुक्त व विवेकपूर्ण है। इन छंदों के प्रवाह के बारे में मैं क्या कहूँ? आइए, इन पन्नों को पलटिए आप स्वयं 'वाह-वाह' कर उठेंगे। वस्तुतः महीयसी कवयित्री आ० अनिता सुधीर 'आख्या' जी की यह पुस्तक प्रस्तुति उनके उपनाम 'आख्या' को सार्थक करती हुई प्रतीत हो रही है। माँ शारदे की प्रिय सुता को मैं असीम शुभकामनाएँ निवेदित करता हूँ।

नवल किशोर सिंह
प्रधान संपादक
संगम सवेरा

मेरी बात....

स्वर्ण विहग के घाव"
अनीता सुधीर "आख्या" जी द्वारा लिखा हुआ खंड काव्य संग्रह है। काव्य के बारे में मेरे जो विचार हैं वह निम्न है....
काव्य सृजन ईश्वर का प्रसाद है ।काव्य सृजन ईश्वर की असीम अनुकंपा है। काव्य साधारण नहीं होता क्योंकि काव्य स्वयं में ईश्वर है, भक्ति है,भाव है, शक्ति है, वैराग्य है, चेतना है,नीति है, जागृति है ,अभिलाषा है, त्याग है, समर्पण है, प्रेम है, ओज है ,श्रृंगार है, वात्सल्य है, किं बहुना काव्य क्या नहीं है????
साहित्य का सृजन जब भी होता है तो उनमें से उक्त कोई गुण, कोई रंग, कोई रस ना हो या इनकी उपस्थिति ना पाई जाती हो ऐसा संभव ही नहीं है। हमारे जितने भी काव्य संग्रह आज तक उपलब्ध है या जितने काव्य वर्तमान में लिखे जा रहे हैं और जो भविष्य में लिखे जाएंगे उन सभी में उक्त तत्वों का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में होना अनिवार्य है, अपरिहार्य है। काव्य एक भाव है। यदि काव्य की परिभाषा की बात की जाए तो इसके लिए कोई उपयुक्त परिभाषा हो ही नहीं सकती क्योंकि जिस प्रकार संसार में दो व्यक्ति एक जैसे नहीं हो सकते। इसीलिए काव्य के संदर्भ में उनकी भाव प्रवणता, उनकी सोचने समझने की शक्ति, उनकी कार्यशैली, काव्य शैली ,उनकी सृजनात्मकता, उनका भाषा बोध इत्यादि सब अलग-अलग होंगे। इसीलिए काव्य की परिभाषा भी सभी के लिए अलग-अलग हो सकती है ।जहां तक मैं समझ पाई हूँ काव्य की केवल इतनी ही परिभाषा है कि....
"जिस भाव में हम अपने विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं जो छंद, अलंकार, मात्राओं से युक्त है, सुव्यवस्थित है, संतुलित है वही काव्य है"। यदि ऐसा नहीं होता तो आदि कवि वाल्मीकि द्वारा आदि श्लोक का उच्चारण

न अनायास ही नहीं हो पाता। यदि वे उस क्रौंच के जोड़े को प्रेमालाप करते हुए नहीं देखते और इस क्रीडा में जिस प्रकार विघ्न डाला गया और क्रौंच पक्षी की मृत्यु हुई वह दृश्य अत्यंत मार्मिक, भावों से भरा हुआ था जिससे आदि कवि वाल्मीकि के मुख से अनायास ही...

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहितम्"।।

प्रस्फुटित हुआ, प्रस्तुत यह पहला श्लोक जो काव्य का प्रथम उदाहरण कहा जा सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं की काव्य में भाव की प्रधानता होती है जिस प्रकार तुलसीदास जी भी लिखते हैं कि...

"स्वांत सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा"

और

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'यशोधरा' में राम के आदर्शमय महान जीवन के विषय में कितना सहज व सरस लिखा है...

"राम। तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है

कवि कोई बन जाए सहज संभाव्य है"।

काव्य को कोई भक्ति के रूप में, कोई प्रेम के रूप में ,कोई श्रृंगार के रूप में, कोई ओज के रूप में, कोई प्रेरणा के रूप में,कोई नीति के रूप में देखता है और अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है। इसीलिए काव्य के बारे में सब की दृष्टि एवं दृष्टिकोण भी अलग-अलग होते हैं। अतः इसकी एक परिभाषा निश्चित करना इसलिए असंभव सा प्रतीत होता है।

काव्य के बारे में जो मेरे विचार थे वह मैंने व्यक्त किए। ऐसा बिल्कुल भी जरूरी नहीं है की सभी पाठक इस बात से ,इस विचार से सहमत हो क्योंकि हम सभी का मत अलग-अलग हो सकता है।

विज्ञात प्रकाशन ,पानीपत , हरियाणा, प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक अपने आप में बहुत कुछ लेकर आई है। कवयित्री ने इसे मां वीणापाणी के कोष में समर्पित करते हुए अपने माता पिता के कर कमलों में भी सादर समर्पित किया है जो एक कृतज्ञता है हमारे उन माता-पिता के प्रति कि जो हम आज जो कुछ भी है उन्हीं की बदौलत है। यह संतान का पावन कर्तव्य

है कि वह अपनी उपलब्धियों का श्रेय अपने माता-पिता के चरणों में समर्पित करता है। सर्वप्रथम विघ्नहर्ता गणपति गणेश जी का वंदन किया गया है जो कि हिंदू धर्म संस्कृति में सभी कार्यों को निर्विघ्न संपन्न कराने के लिए सबसे अधिक पूजनीय देवता माने जाते हैं।इसीलिए कवियत्री ने भी सर्वप्रथम गणपति जी की वंदना करते हुए अपने शुभ संकल्प को आगे बढ़ाया है

"स्वर्ण विहग के घाव" कुछ पन्ने इतिहास के

जैसे कि नाम से ही स्पष्ट है आजादी के अमृत महोत्सव के लिए यदि हम इस पुस्तक को एक श्रद्धांजलि ,भावांजलि कहें तो कोई अअतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि कवियत्री ने इस पुस्तक में हमारे शहीदों को नमन किया है। हमारा इतिहास हमें उन शहीदों के प्रति कृतज्ञता अर्पित करने के लिए प्रोत्साहित करता है जिन्होंने देश प्रेम में अपने प्राण हंसते-हंसते न्यौछावर कर दिए। यह पुस्तक युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा है। यह पुस्तक भारत के स्वर्णिम इतिहास की गौरव गाथा है।

इतिहास को वर्तमान में लाना बहुत ही क्रांतिकारी कदम होता है और ऐसा करने वाला भी किसी योद्धा से कम नही हो सकता।

कवयित्री के शब्दों में ही उनका पूर्ण व्यक्तित्व ही परिलक्षित होता है

"पढ़ाना मेरा शौक है । शिक्षा के वास्तविक अर्थ को पूरा करने का प्रयास करती हूँ।

नित्य कुछ सीख कर गहराई में जा कर साहित्य के विकास में लगी हूँ । जीवन के अनुभव से ये सीखा कि सीखने की कोई उम्र नहीँ होती।दूसरी बात किसी भी कठिन परिस्थिति मे विचलित न हो कर सकारात्मक होना ही जीवन का ध्येय वाक्य है"।

आत्मकथ्य में कवयित्री ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अपनी विनम्रता को भी प्रदर्शित किया है। एक कवि, एक लेखक को संवेदनशील और विनम्र आवश्यक रूप से होना ही चाहिए क्योंकि यदि इन दोनों का अभाव होगा तो उसकी रचनाओं में स्पंदन , भाव, मर्म, का वह स्पर्श आ ही नहीं सकता जो काव्य का आधार है।

इसलिए कवयित्री के इस संग्रह के लिए वह निश्चय ही बधाई की पात्र हैं। उनकी दूरदृष्टि आने वाले नवांकुरों के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करने के

साथ- साथ उनका मार्ग भी प्रशस्त करेगी क्योंकि सर्वकालिक रचना वही कहलाती है जो प्रत्येक समय में उतनी ही महत्वपूर्ण हो, प्रासंगिक हो जितनी वह भूतकाल में थी और लेखिका इस कसौटी पर खरी उतरती है। मैं उनके इस काव्य संकलन के वैविध्य पर उन्हें हार्दिक बधाई प्रेषित करती हूं एवं उनके आने वाले जीवन के लिए हृदय से अशेष शुभकामनाएं प्रदान करती हूं। उनकी लेखनी सदैव ऐसे ही समाज का मार्ग प्रशस्त करती रहे एवं वे अपने आने वाले जीवन में प्रत्येक प्रकार की सफलता प्राप्त करती रहें।

इति शुभमस्तु

डॉ विदुषी शर्मा, (वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)

अकादमिक काउंसलर, IGNOU

शोध निर्देशक, JJTU

विशेषज्ञ, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार

OSD , (Officer on Special Duty)NIOS

(National Institute of Open Schooling)

शुभाशंषा

कवियत्री सुश्री अनिता सुधीर 'आख्या' विरचित खंडकाव्य "स्वर्ण विहग के घाव" (कुछ पढ़ने इतिहास के) का अवगाहन करते हुए मैंने यह पाया कि आख्या जी का अंतस देश-प्रेम से पूर्ण है और वे देश के प्रति कुछ करने के लिए सदा उद्यत प्रतीत होती हैं। गणेश वंदना के पश्चात भारत मां का यशोगान अपने छंदों के माध्यम से जिस प्रकार कवियत्री द्वारा किया गया है, वह अप्रतिम है।

कवियत्री ने ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत में आने से लेकर अनेक संघर्षों की गाथा समेटते हुए भारतीय स्वतंत्रता की यात्रा करने के बाद भी कवियत्री ने अपनी लेखनी के माध्यम से देशी रियासतों का विलय, विभाजन का दर्द,संपत्ति का बंटवारा, से लेकर 26 जनवरी 1950 के पूर्ण गणराज्य तक की गाथा को काव्य का विषय वस्तु बनाया है। उसके पश्चात बिरसा मुंडा, श्यामा प्रसाद मुखर्जी आदि पर भी अपने विचारों के माध्यम से उन्हें श्रद्धांजलि दी है।

निःसंदेह अनेक शीर्षकों में निबद्ध यह कृति अपने अंतस में सवैया, कुंडलियां एवं आल्हा छंद के कलेवर को समेटे अपने उद्देश्य को प्राप्त करती है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने जिस कविता के विषय में कहा है ...

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
इसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।

इस उद्देश्य को यह कृति अवश्य ही प्राप्त करेगी। कृति की भाषा शुद्ध संस्कृत निष्ठ है।

अपने गौरवशाली इतिहास के कथानक को काव्य के माध्यम से प्रकट कर कवियत्री ने निश्चित रूप से सराहनीय कार्य किया है।

मेरी अनंत शुभकामनाएं हैं कि आपकी लेखनी इसी प्रकार उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हो।
वंदे मातरम

डॉ पवनपुत्र बादल
प्रबंधक/ प्रकाशक "राष्ट्र धर्म"
सलाहकार राजभाषा समिति, विदेश मंत्रालय ,भारत सरकार
महामंत्री उ.प्र.- अखिल भारतीय साहित्य परिषद
सदस्य बुंदेलखंड विकास बोर्ड सदस्य भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR)

शंख से स्वागत...

सन 2021-22 को हम भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने पर अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। 15 अगस्त 1947 की पृष्ठभूमि में लगभग 100 वर्षों का स्वतंत्रता संघर्ष विद्यमान है। स्वाधीनता हेतु अनवरत संघर्ष और अंग्रेजों का दमन चक्र दुनिया के इतिहास की बेमिसाल घटना है। इस पृष्ठभूमि को केंद्र में रखकर साहित्यकारों ने तत्कालीन घटनाओं,नायकों और नीतियों को केंद्र में रखकर अनेक ग्रंथों की रचना की है।

इसी संदर्भ में प्रसिद्ध कवियत्री अनिता सुधीर 'आख्या' द्वारा रचित खंड काव्य - स्वर्ण विहग के घाव का प्रकाशन अत्यंत समीचीन है। उनके द्वारा रचित खंड काव्य में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पृष्ठों को उलटने और उसमें निहित संघर्ष कटु अनुभवों और पीड़ा के साथ-साथ आत्म गौरव का भान उत्पन्न करते हैं। रचनाकार ने स्वयं शीर्षक के साथ उपशीर्षक 'कुछ पन्ने इतिहास के- देकर स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को खंगालने की चेष्टा कर के वर्तमान पीढ़ी में संचेतना उत्पन्न की है।

आल्हा सवैया छंद में लिखी लगभग दो सौ पृष्ठों की इस पुस्तक में ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन से लेकर गोवा की आजादी तक का परिवेश लेखिका ने समेटने का प्रयास किया है। इसमें लगभग चालीस वीर क्रांतिकारियों का स्मरण किया गया है जिन्होंने सामाजिक,राजनीतिक व्यापारिक सामरिक अनेक दृष्टियों से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व निछावर किया था।

आख्या जी ने 1857 की क्रांति के पीछे छुपे हुए सभी पहलुओं पर सूक्ष्म दृष्टि रखी है। लेखिका ने इस क्रांति को एक नेक प्रयोजन माना है।

वर्ष अट्ठारह सौ सत्तावन,नेक प्रयोजन का आरंभ।

मेरठ इसका केंद्र बना था,टूटे अंग्रेजों का दंभ।।

लेखिका अनिता सुधीर ने इस घटना के महत्व को पहचाना और शहीद का स्मरण करके लिखा है।

सैन्य प्रभारी धन सिंह रहे,बागी नेता की पहचान। मुक्त कराए कैदी

सारे,कारावास रहा संधान।।

आख्या जी ने इस क्रांति की जनव्यापकता को पहचान कर लिखा है।

विद्रोही सैनिक और पुलिस का,साझा था यह अभियान।

ग्रामीण हजारों में निकले, जनता देती डोर कमान।।

आग लगी जो मेरठ में थी, पहुंची झांसी और बिहार।

और अवध की बेगम हजरत, सैनिक का करतीं सत्कार।।

मैकाले की शिक्षा नीति ने भारतीय जनमानस को पंगु करने में भूमिका निभाई थी। आज भी अंग्रेजी हमारे स्वाभिमान को चुनौती देती है। लेखिका ने भारत की गुलामी के लिए उत्तरदाई इस तथ्य को पहचाना

मैकाले की शिक्षा करती,भारत संस्कृति पर आघात।

गोरों का अत्याचार बढ़ा,काँपे थे सैनिक के गात।।

ब्रिटिश शासकों ने मैग्नाकार्टा की आड़ में जो अनीतियां की,लेखिका का ध्यान उस ओर भी गया है।

नई नीतियों ने लिखी जो कहानी,फिरंगी करे थे वही क्षुद्रता।

खड़ा काल प्रत्यक्ष यह प्रश्न पूछे, तुम ही क्या सहोगे सदा क्रूरता।।

सुधी कवियत्री का ध्यान भारत के उन व्यापारियों की ओर भी गया है जिन्होंने स्वदेशी की अवधारणा को मन में बैठाकर विदेशी वस्तुओं के

स्थान पर स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण एवं व्यवहार के लिए यातनाएं सही। इन्हीं में से एक नाम में तमिलनाडु के राजनेता और स्वतंत्रता सेनानी वी. ओ. सी. ।उन्होंने भारतीय जहाज कंपनी शुरू करने के कारण अंग्रेजों द्वारा प्रताड़ित किया गया।

लेखिका उनके कृतित्व से आम जन को परिचित कराते हुए लिखती हैं।

दूरदर्शी पिल्लई, आत्मनिर्भरता के पर्याय।

पोत हो अब अपना, स्वप्न था देशी अध्याय।।

इसी प्रकार गांधी आंदोलन से जुड़ी एक साधारण स्त्री मातंगिनी हजारा के बलिदान को आख्या जी नहीं भूली हैं।

लेखिका ने भारतीय स्वतंत्रता में गिलहरी की भांति कर्म करके लोगों के लिए आदर्श उपस्थित करने वाली बलिदानी के कृतित्व को अपनी पुस्तक में संजोया है।

गोली माथे पर खाई थी,नहीं झुकाया ध्वज का मान।

वंदे मातरम कहते-कहते, करती प्राणों का बलिदान।।

वास्तव में आख्या जी का यह खंडकाव्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वीर *सेनानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। अमृत महोत्सव के अवसर पर इस पुस्तक का प्रकाशन वर्तमान पीढ़ी को भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष और स्वतंत्रता सेनानियों के स्मरण दिलाने में निश्चित ही सफल है।मैं ऐसे गंभीर स्वाभिमानी और भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित इस काव्यात्मक-ऐतिहासिक-दस्तावेज लिखने के लिए कवियत्री अनीता सुधीर आख्या जी को साधुवाद देता हूं और उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।*

प्रो0 पवन अग्रवाल

हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

शुभकामना संदेश

रसायन की तूलिका में इतिहास की रोशनाई भर बीते क्षणों को कोरे पन्नों पर उकेर देना बड़ा ही जीवट भरा कार्य है।
रसायन विज्ञान में सिद्धहस्त कावयित्री अनिता सुधीर ने खण्ड काव्य "स्वर्ण विहग के घाव" के माध्यम से इतिहास के पन्नों को बखूबी उकेरने का कार्य बड़ी दक्षता के साथ किया है।कावयित्री की तूलिका से अभिसिंचित यह खण्ड-काव्य पाठकों के सुखद स्मृति और विवेक को स्पंदित करेगा।
इस आशा और विश्वास के साथ कावयित्री की जीवंत होती कविताओं के लिए मेरी अनंत शुभकामनायें।

घनश्याम सहाय

प्राचार्य, डी ए वी

डुमराव,बक्सर,बिहार

समीक्षा

स्वर्ण विहग के घाव (कुछ पन्ने इतिहास के) :
खंडकाव्य का खंड-खंड राष्ट्रीय भाव में अखंड
अनिता सुधीर आख्या एक प्रकृति प्रेमी, शिक्षिका, समाज प्रेमी कवियत्री हैं।आख्या जी का खंडकाव्य 'स्वर्ण विहग के घाव कुछ पन्ने इतिहास के' में आख्या छंद से राष्ट्र के शूरवीरों की, समाज सुधारकों की श्रद्धा भाव से वंदना करती हैं।सेनानियों का परिचय कराते समय अपने उपनाम पर प्राप्त आख्या छंद का खुले भाव से प्रयोग करती हैं प्रस्तुत खंडकाव्य विशेष रुप से आकर्षित करता है क्योंकि इसमें राष्ट्र के वीर सैनिकों और समाज सुधारकों के जीवन से संबंधित पलों को तिथि सहित अंकित करके छंद बद्ध किया गया है। प्रत्येक छंद से पूर्व नाम, तिथि, घटना,स्थान का वर्णन पाठक के समक्ष पारदर्शिता प्रस्तुत करता है जो पाठक के लिए लाभकारी है।देशभक्ति भाव की सघनतम अभिव्यक्ति ने संग्रह को शिखर पर लाकर खड़ा कर दिया है। छंदों का फलक अतीव व्यापक है। समस्त संग्रह आल्हा छंद में अभिव्यक्त हुआ है कुंडलिया,सवैया तथा आख्या छंद की प्रचुरता से संग्रह की सजावट की गयी है। समस्त खंड काव्य चार सर्गों में विस्तार पाता है। प्रथम सर्ग ईस्ट इंडिया का आगमन, द्वितीय सर्ग स्वतंत्रता आंदोलन,तृतीय सर्ग विभाजन और चतुर्थ सर्ग अखंड भारत के स्वप्न दृष्टा से सुंदर धरातलीय कामना की गई है।
फकीर और सन्यासी विद्रोह में कवयित्री कहती है

विपदा सुरसा के मुख्य जैसी, झेल रहे थे बंग अमीर।

धार्मिक कर को बंद किया जब ,भूखे मरते नंग फकीर ।।

चारों ओर की दमन नीति ने संत- फकीरों हिंदू-मुस्लिमों में आतंक का भाव भर दिया था। यथा-

अपनों की पीड़ा जब देखी, काँप उठा मुस्लिम समुदाय।

निर्णय था फिर सोच समझकर, लूट बची है एक उपाय।।

संत महात्माओं ने राष्ट्र निर्माण में सदा से मुख्य भूमिका निभाई है। इसका प्रत्यक्ष प्रस्तुत उदाहरण यह कुंडलिया छंद है जो आनंद मठ के सन्यासी विद्रोह 1882 में बंकिमचंद्र उपाध्याय जी द्वारा रचित उपन्यास पर आधारित है।

सन्यासी विद्रोह का, लिखे कथानक चंद्र।

अद्भुत कृति आनंद मठ, तोड़े सबकी तंद्र।।

तोड़े सबकी तंद्र, क्रांति का बिगुल बजाया।

गहरा पड़ा प्रभाव,स्वप्न आजाद सजाया।।

पुस्तक पर प्रतिबंध, लगाए थे अधिशासी।

देशभक्ति के भाव, जगाते थे सन्यासी।।

लेखिका गुलामी को पिंजरे में कैद पक्षी की मनोदशा से अभिव्यक्त करती है।

पिंजर में रहती चिड़िया जब,खो निजता सहती वह ताप।

अंतस घायल हो तड़पे फिर,अन्न लगे उसको अभिशाप।।

कौन सुने यह सत्य भयावह,मौन करे वह नित्य विलाप।

पंख रखे वह भोग रही दुख, अंबर का नित ले परिमाप।।

जैसे पक्षी स्वतंत्र होने के लिए पंख फड़फड़ाता है पिंजरे पर सिर पटकता है।ठीक वैसी ही स्थिति गोरों की कैद से मुक्त होने के लिए भारतवासियों की थी। प्रत्येक भारतवासी अपनी जान पर खेलने को तैयार था। विरोध में आबाल-वृद्ध अपनी शक्ति से यथा संभव प्रदर्शन करते थे फिर भले ही गौरों के समक्ष उन्हें मुंह की ही खानी पड़ी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम इस शक्ति का मजबूत उदाहरण रहा है। यदि यह संग्राम ना होता तो देश में स्वतंत्रता का बीजारोपण कभी नहीं होता; जिसने वट वृक्ष बनकर देश को स्वतंत्रता की छाया दी। सुष्ठु उदाहरण दृष्टव्य है।

विद्रोही सैनिक और पुलिस,का साझा था यह अभियान।

ग्रामीण हजारों में निकले,जनता लेती डोर कमान।

सैन्य प्रभारी धन सिंह रहे,बागी नेता की पहचान।

मुक्त कराए कैदी,कारावास रहा संधान।।

राष्ट्र में असंख्य व्यक्तियों के साथ अनेक संस्थाएं कंधे से कंधा मिला कर खड़ी थी। तभी तो राष्ट्र की श्रेष्ठ संगठित संस्था कांग्रेस पर भी कवियत्री ने सुंदर विचार उद्घाटित किए हैं। बंग-भंग, फूट डालकर राज करो की नीति, स्वदेशी आंदोलन, स्वदेशी उद्योगों की स्थापना, सांस्कृतिक प्रगति और शिक्षा का प्रसार तथा अखंड भारत के स्वप्न दृष्टा में समाज सुधारकों ने समाज की बुराइयों से भी स्वतंत्र कराने का बीड़ा उठाया यथा-
राजा राममोहन राय की मंगलमय कामना दर्शनीय है-

अधुना भारत के जनक रहे, पुनर्जागरण का ले स्वप्न।

धर्म कुरीति मिटे मानव में, राजा मोहन करते यत्न।।

रोजगार गौरों का छोड़ा, स्वतंत्रता का जागा भाव।

दो मोर्चे पर साथ खड़े थे,पाखंडों से ले टकराव।।

मंगल पांडे की फांसी जन-जन में एक तरफ वीर सपूत के खोने से रोंगटे खड़े कर देती है, वही जन मन में मंगलमयता का भाव भी भरती है, कुर्बानी का भाव अटूट करती है। यह छंद घर -घर में मंगल को पैदा करता है।

आठ अप्रैल की फांसी में, मंगल घर-घर लेते जन्म।

हर पन्ने पर अमर हुए वह, कुर्बानी को कहते धर्म।।

अस्तु यह खंडकाव्य वीर सेनानियों, समाज सुधारकों की वंदना है इस प्यारे सृजन के लिए कवयित्री को हृदय से साधुवाद। अशेष मंगलकामनाएं।

डॉ०अनीता भारद्वाज 'अर्णव'

भारद्वाज-विला,दहिया ऑटो केयर के सामने

नजदीक दंडी आश्रम, चरखी दादरी पिन- 127306

आख्या अभिव्यक्ति

माँ शारदे और इष्ट देव को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ जिनके आशीर्वाद से यह मेरा खंडकाव्य स्वर्ण विहग के घाव (कुछ पन्ने इतिहास के) आजादी की 75 वीं वर्षगांठ पर और अमृत महोत्सव की शृंखला में आकार ले रहा है।
भारत की गौरवशाली संस्कृति और सोने की चिड़िया का स्वर्णिम इतिहास सदा ही आत्म विभोर करता रहा है।इन्ही गौरवमयी स्मृतियों के पल में मेरे मन में कितने भाव आते हैं जो कभी आह्लादित करते हैं तो कभी गहन पीड़ा और विषाद से भर देते हैं।
आक्रांताओं और गद्दारों की कुटिल चालों के कारण स्वर्ण विहग ने अत्यंत घाव सहे हैं और ऐसा महान देश सदियों तक दासता की बेड़ियों में जकड़ा रहा है।यह पढ़ते और लिखते समय मेरी कलम कितनी ही बार रोई है और असह्य वेदना का अनुभव हुआ है।
इतिहास के इन पृष्ठों का संघर्ष और अनगिन बलिदानी गाथाओं को शब्दों में बाँध पाना असंभव है किंतु सवैया कुंडलिया और आल्हा छंद के माध्यम से एक तुच्छ प्रयास किया है।इस प्रयास में आ0 संजय कौशिक विज्ञात जी और कलम की सुगंध पटल का निरंतर सहयोग मिलता रहा।आ0 गुरुदेव और आ0 नीतू जी के पग-पग पर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से ही ये कार्य संभव हो सका है।

स्वदेशी, स्वतंत्रता, देश प्रेम एक भाव है, एक विचार है, कर्म और चिंतन है जिसके सामने सब कुछ नगण्य हो जाता है। इसी भाव को साथ लेकर अनगिन वीर सेनानियों ने आजादी के संघर्ष में अपने प्राण आहुत किये हैं।कुछ याद रहे और उनकी अमिट छाप हृदय पटल पर अंकित है तो कुछ इतिहास के पन्नों में गुमनाम रहे।उन सभी वीर योद्धाओं को अपने भाव सुमन अर्पित करती हूँ । सभी को लिख पाना तो संभव नहीं था किंतु प्रयत्न अवश्य किया है।इन सैनिकों के अमर गाथा के कारण ही भारत देश आज अमरता की ओर चल पड़ा है।

आ0 विज्ञात जी द्वारा नए छंदों पर शोध किये गए छंद में से एक आख्या छंद पर सेनानियों का परिचय लिखा है।आज इन्हीं के शौर्य के कारण ही देश आजाद हवा में साँसे ले रहा है। इसी विरासत को हमें अब सँभालना है।

अपने हित को जब साधेंगे,सदा देश के ही उपरांत।
भारत उन्नत भाल रहेगा,और अडिग होगा दृष्टांत।।

विज्ञात प्रकाशन का हार्दिक आभार जिससे यह खंड काव्य मूर्त रूप ले सका।
पति,परिवार और मित्रों के सहयोग और प्रोत्साहन से मुझे सदा संबल मिला है,जिसका परिणाम आपके समक्ष है और ये खंड काव्य आपके आशीष और स्नेहिल प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में है....

अब आत्म बोध का हो विचार।
मिल लक्ष्य साध लो सब अपार।।
हों स्वर्ण विहग के नव्य पंख,
सुन मातु भारती की पुकार।।

अनिता सुधीर 'आख्या'

आभारी हृद से रहे, लेकर भाव कृतज्ञ...

माननीय विद्वजन के प्रति कृतज्ञता और हार्दिक आभार प्रकट करने के लिए शब्द भी कम पड़ जाते हैं..
गुरुवर आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी को सादर नमन जिनके मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के बिना खंडकाव्य का सृजन संभव न हो पाता।

साहित्यिक यात्रा के साथी और शुभचिंतक आदरणीय नवल किशोर जी को सादर धन्यवाद जिनका मेरे प्रति विश्वास मेरा संबल है। आपकी लेखनी ने आमुख लिखकर खंडकाव्य का मान बढ़ाया है।

आदरणीय डॉक्टर विदुषी शर्मा जी को सादर नमन जिनके विचार और भाव मेरी पुस्तक और मेरे लिए अमूल्य निधि हैं।मैं आपकी सदैव ऋणी रहूँगी।
आदरणीय डॉक्टर पवन बादल जी का जिनकी शुभाशंषा से मेरा हृदय आल्हादित हो गया और आप के आशीर्वचन मेरे लिए सदा ही मील के पत्थर साबित होंगे।
आदरणीय प्रोफेसर पवन अग्रवाल जी को सादर वंदन और हार्दिक आभार जिनकी सूक्ष्म समीक्षा और शंख से स्वागत करते हुए शब्दों से मेरा लेखन सफल हो गया।
आदरणीय घनश्याम सहाय जी का सादर आभार
जिनके स्नेहिल आशीर्वचन की पूंजी प्राप्त कर मैं अभिभूत हूँ।
आदरणीय डॉ अनीता भारद्वाज अर्णव जी का सादर आभार जिन्होंने एक समालोचक की तरह खंड काव्य पर अपनी विस्तृत अमूल्य समीक्षा देकर मेरा मान बढ़ाया है।
और आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रहेगी।
अनिता सुधीर आख्या

अनुक्रमणिका

प्रथम सर्ग 32
ईस्ट इंडिया कंपनी का आगमन 32
भारत 33
गौरव गान 34
सोने की चिड़िया 36
ईस्ट इंडिया कंपनी (31 दिसम्बर 1600) 37
ईस्ट इंडिया कंपनी की व्यापार नीति 38
काल कोठरी (1756) 40
ब्रिटिश उदय 42
गद्दारी के दंश 43
परतंत्रता 44
प्लासी का युद्ध(1757) 45
प्लासी का युद्ध *परिणाम* 46
फकीर और सन्यासी विद्रोह 48
आंदोलन 49
आनंद मठ 52
पिंजरा 54
बक्सर का युद्ध 55
द्वितीय सर्ग 56
स्वतंत्रता आंदोलन 56
प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन 57

क्रांति मशाल 58
सैन्य विद्रोह से जनव्यापी विद्रोह 59
मैग्नाकार्टा 60
1857 की क्रांति के परिणाम 61
ईस्ट इंडिया कंपनी का अंत(1858) 62
राष्ट्रीय चेतना 63
नवजागरण 65
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 66
बंग भंग (16 अक्टूबर 1905) 69
बंग भंग के परिणाम 72
स्वदेशी आंदोलन 73
स्वदेशी उद्योगों की स्थापना 74
उग्र राष्ट्रवाद का विकास 76
विभाजन की नींव 77
सूरत अधिवेशन (1907) 79
मुस्लिम लीग (1906) 80
बंग भंग की समाप्ति (1911) 83
दिल्ली लाहौर षड्यंत्र(1912) 84
नीतियों में टकराव 86
आंदोलन की विफलता 87

गांधी..88

लखनऊ अधिवेशन (1916)..90

जलियांवाला बाग कांड (1919) 91

असहयोग आंदोलन (1920) 94

खिलाफत आंदोलन (1921-22)...96

असहयोग आंदोलन की विफलता...97

चौरी चौरा कांड (1922)..98

काकोरी कांड (9 अगस्त 1925) 100

साइमन कमीशन (8 नवम्बर 1927)..104

असेंबली बम कांड (8 अप्रैल 1929) 108

दांडी यात्रा (12 मार्च 1930)...111

नमक आंदोलन..112

सविनय अवज्ञा आंदोलन (6 अप्रैल 1930) 114

गोलमेज सम्मेलन (12 नवंबर 1930) 116

भारत छोड़ो आंदोलन (9 अगस्त 1942) 120

तृतीय सर्ग...123

अखंड भारत का विभाजन..123

अगस्त क्रांति 124

आजाद हिंद फौज (1943)..126

जलसेना विद्रोह (1946) 130

विभाजन के कारण 133

मोउंटबैटन योजना 135

विभाजन की प्रक्रिया 137

रेडक्लिफ रेखा 138

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम (1947) 141

विभाजन का दर्द.. 143

भारत का राजनीतिक एकीकरण 146

पूर्ण गणतंत्र (26 जनवरी 1950) 148

गोवा मुक्ति आंदोलन.. 149

आज का भारत 153

चतुर्थ सर्ग 154

अखंड भारत के स्वप्नदृष्टा.. 154

राजा राममोहन राय.. 155

बेगम हजरत महल 156

दादाभाई नौरोजी.. 157

मंगल पांडे.. 158

रानी लक्ष्मीबाई 159

झलकारी बाई.. 160

अवंती बाई लोधी 161

सुरेंद्रनाथ बनर्जी.. 162

स्वामी श्रद्धानंद 163

बाल गंगाधर तिलक 164
विपिन चंद्र पाल 165
भीकाजी कामा 166
मदन मोहन मालवीय 167
लाला लाजपत राय 168
गोपाल कृष्ण गोखले 169
मोहनदास करमचंद गाँधी 170
मातंगिनी हाजरा 171
देशबंधु चितरंजन दास 172
वी ओ चिदंबरम पिल्लई 173
सरदार वल्लभ भाई पटेल 174
बिरसा मुंडा 175
सरोजनी नायडू 176
डॉ राजेंद्र प्रसाद 177
जवाहर लाल नेहरू 178
खुदीराम बोस 179
करतार सिंह सराभा 180
राम प्रसाद बिस्मिल 181
उधम सिंह 182
अशफ़ाक़ उल्ला खाँ 183
श्यामा प्रसाद मुखर्जी 184
लाल बहादुर शास्त्री 185

चंद्रशेखर आजाद 186
सुखदेव थापर 187
दुर्गा भाभी 188
भगत सिंह 189
राजगुरु 190
अरुणा आसिफ अली 191
राम मनोहर लोहिया 192
पार्वती गिरि 193
वंदेमातरम 194

गणेश वंदना

कर जोड़ यही विनती करती,प्रभु भूपति लेखन को वर
देना।
मसि कागद ले नव छन्द लिखूँ,लय शिल्प विधा उर में भर
देना।
नित शब्द सजा जो भाव लिखूँ,उसमें रस भूषण से धर
देना।
अब विघ्न विनाशक विघ्न हरो,व्रत पूर्ण तुम्हीं इसका कर
देना।

वंदना

सर्वप्रथम वंदन शिवनंदन,ओज समसि में भर दें आप।
वीरों की गाथा लिख कर यह,जनमानस पर छोड़े छाप।।

बुद्धि प्रदाता गणपति भगवन,छन्द विधा का दे दें ज्ञान।
शव्द कलम में आप भरें जो,रस लिखती हो वीर महान।।

मातु चरण में शीश झुका कर,माँग रही हूँ आशीर्वाद।
लक्ष्य कठिन को संभव करना,आल्हा का अब गूँजे नाद।।

खंड काव्य आरंभ किया है,वीणापाणी दो वरदान।
मसि कागज का चीर हृदय दे,लिख दे भारत गौरव गान।।

गुरुजन दीपक पुंज रहें हैं,वंदन करते बारम्बार।
विश्वास जगाते जब मन में,आल्हा लेता फिर आकार।।

प्रथम सर्ग

ईस्ट इंडिया कंपनी का आगमन

भारत

भारत (भा+रत) आन्तरिक प्रकाश में लीन

भारत नाम मनु के वंशज प्राचीन सम्राट भरत के नाम से

भारत गौरव गान लिखें जब,पुण्य धरा लगती सम चंदन।
जन्म लिए प्रभु राम यहाँ पर,धर्म सनातन का अभिनंदन।।
मानवता पहचान बना कर,सत्य करे इसका नित वंदन।
पावन संस्कृति पूज रही युग,जीवन में भरती नव स्पंदन।।

गौरव गान

ऋषि मुनियों की भूमि रही है,वैदिक संस्कृति का इतिहास।
सत्य सनातन धर्म हमारा,शस्त्र उठाना है उल्लास।।

मुक्त कंठ से देव सुनाते,वेद पुराणों का नित सार।
शून्य दशमलव हमने खोजा,संत चरक को दें आभार।।

कण कण में प्रभु राम बसे हैं,और शिवालय चारों ओर।
रहता लीन हिमालय तप में,तुलसी चौरे पर है भोर।।

धेनु,नदी को माता कहते,कन्या मानें देवी रूप।
पूज्य रहें हैं वृक्ष सदा से,धरती माता रूप अनूप।।

भू रज मस्तक की शोभा है,शौर्य समर्पण है पहचान।
कर्ज चुकाते माटी का हम,हँस कर देते हैं बलिदान।।

इण्डिया : सिन्धु नदी के अंग्रेजी नाम "इण्डस" से

हिंदुस्तान: हिंद की भूमि

उत्तर दुर्ग बना हिम पर्वत,पावन गंग दुलार रहे नित।
नीर पयोधि पखार रहे पग,तारक वृन्द निहार रहे नित।।
केसर चूनर ओढ़ चले हम,भारत भू अँकवार रहे नित।
हिन्द किरीट सुशोभित पावन,शस्य धरा उपकार रहे नित।।

सोने की चिड़िया

धन दौलत भरपूर खनिज या,हिन्द मसालों का था लोभ।
आक्रांता जो लूट लिए हैं,सुन कर मन में होता क्षोभ।।

ईरानी चीनी फ्रांसीसी,गिन लो कितने अनगिन नाम।
लालायित सम्पूर्ण जगत था,हो भारत में उनका धाम।।

इकतीस दिसंबर सोलह सौ,करने आए जब व्यापार।
ईस्ट इंडिया की नींव पड़ी,रख कर मन में निम्न विचार।।

इस धरती के आकर्षण में,आया जब गोरा साम्राज्य।
जंजीरों में जकड़ा उसने,तड़पे सारे भारत राज्य।।

कुत्सित दृष्टि पड़ी दुश्मन की,स्वर्ण विहग के तोड़े पंख।
वीरों का तब रक्त पुकारे,नाद करा दो अब तो शंख।।

ईस्ट इंडिया कंपनी (**31** दिसम्बर **1600**)

ईस्ट इंडिया कंपनी की साम्राज्यवादी आकांक्षाओं ने भारत का इतिहास और भूगोल बदल दिया।

ईस्ट इंडिया कंपनी,पहुँची भारत द्वार।
आए जेम्स नरेश फिर,करने को व्यापार।।
डच से समझौता किये,पुर्तगाल अवरोध,
जहाँगीर के काल में,पाए फिर अधिकार।।

ईस्ट इंडिया कंपनी की व्यापार नीति

लंदन के व्यापारी आए,उतरे वो सूरत के पोत।
सोने की चिड़िया को देखा,इसके पर में धन का स्त्रोत।।

कैप्टन हाकिँस पहुँचे थे जब,मुगल नवाबों के दरबार।
कलखाना है यहाँ बनाना,उनसे माँग लिया अधिकार।।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण,फैल रहा था कारोबार।
मार्ग नहीं अवरुद्ध रहे अब,चाहें शासन सँग व्यापार।।

निर्माण किलों का करवाया,और बनाए बंदरगाह।
पैर पसार रहे थे चहुँ दिस,पूरे भारत की थी चाह।।

चाय कपास अफीम सभी का,बढ़ता जाता था व्यापार।
कितने बंदरगाह लिए फिर,ढूँढ़ रहे थे नित बाज़ार।।

ईस्ट इंडिया कंपनी

कम दामों में क्रय करके वो,खूब कमाते मोटा लाभ।
मजदूरों का शोषण करके,लूट रहे थे फिर स्वर्णाभ।।

सन सोलह सौ सत्तर में जब,चार्ल्स ब्रिटिश देते आदेश।
युद्ध विदेशों में लड़ना अब,कालोनी का एक निवेश।।

फ्रांसीसी डच प्रतिद्वंदी से,ईस्ट कंपनी जाती जीत।
बंगाल तटीय नियंत्रण से,भारत की काँपी थी भीत।।

मुगलों गोरों में युद्ध हुआ,अंग्रेजों के काँपे गात।
कलखाने जो नष्ट हुए थे,उससे खायी तगड़ी मात।।

युद्ध प्रवीण हुए फिर गोरे,मँगवाए अधुना हथियार।
लक्ष्य गुलाम रहे अब भारत,पैदा करते थे गद्दार।।

काल कोठरी **(1756)**

अंग्रेजों की नीतियों से तंग आकर फोर्ट विलियम किले पर नवाब सिराजुदौला का आक्रमण

गोरों का अत्याचार बढ़ा,बंग करे प्रतिकार।
कलकत्ता की काल कोठरी,बनी युद्ध आधार।।
इतिहास प्रसिद्ध हुआ प्लासी,युग करता है क्षोभ,
परतंत्र हुआ था तब भारत,घात दिए गद्दार।।

काल कोठरी

ईस्ट कंपनी को भारत में,बीत रहे थे वर्ष अनेक।
मुम्बई बड़ौदा,कलकत्ता,प्रांत विशेष रहे थे छेक।।

शासक मुगलों के भी बदले,और बदलती उनकी नीति।
गोरों को अधिकार दिया जो,भारी पड़ती फिर यह प्रीति।।

मतभेद सियासत में जो थे,नित्य भुनाए गोरे लोग।
निर्बल होते जाते शासक,अंग्रेजों का उत्तम योग।।

कोष भरा हीरे माणिक से,और रही दौलत की वृष्टि।
बंग नवाब समझते थे अब,अंग्रेजों की कुत्सित दृष्टि।।

सन सत्रह सौ छप्पन था वो,काल कोठरी बनती काल।
बदले की फिर आग जलाए,नोच रहे थे गोरे बाल।।

ब्रिटिश उदय

छल अंध करे जनमानस को,कपटी दृग लोभ गहा करती है।
जब व्याल छिपे कर में रहते,धरणी जयचंद्र कहा करती है।।
बदला कब जीवन मानव का,वसुधा फिर मीर सहा करती है।
छल जाफ़र भारत से करते,सदियाँ दिशहीन रहा करतीं है।

गद्दारी के दंश

क्रंदन करती आज कलम भी,तथ्य गुलामी देते क्षोभ।
गद्दारों के कर्म कुटिल थे,कुछ टुकड़ों का उनको लोभ।।

अंतर्मन विचलित होता है,तब था जाफ़र जैसा एक।
अब भी भारत में रहते हैं,छिप-करके गद्दार अनेक।।

जिस थाली में ये खाते हैं,उसमें ही फिर करते छेद।
लाभ क्षणिक ही सोचे समझें,दुश्मन को देते सब भेद।।

हथियार कहाँ फिर जीत लिखे,गद्दारी नित देती घाव।
लहु नीर बना बहता रहता,भीख माँगने का है चाव।।

पृथ्वी राज मरा करते फिर,गद्दारों की सह कर घात।
कोख छली जाती भारत की,आती दुख की काली रात।

परतंत्रता

23 जून 1757 को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना और बंगाल के नवाब की सेना के मध्य युद्ध

तथ्य लिए परतंत्र भयानक,भारत का लिखता इतिहास।
सत्य सुना पल काँप गया अब,जीवन झेल रहा वह त्रास।।
दास बने जब बोझ सहे नित,दुष्कर था फिर भोग विलास।
कथ्य पढ़े नर शोषण के जब,है उपजे फिर क्षोभ खटास।।

प्लासी का युद्ध(1757)

क्षेत्र रहा किंशुक फूलों का,नाम पलासी उस अनुसार।
सत्रह सौ सत्तावन था वो,युद्ध छिड़ा था हाहाकार।।

क्रूर नवाब हठी दौला था,करता था वो अत्याचार।
खंजर चलते जब घर में ही,पैदा होते फिर गद्दार।।

अंग्रेजों की काली नीयत,लक्ष्य रहा सत्ता अधिकार।
धोखे से षड़यंत्र रचा कर,ढूँढ़ रहे थे नित्य शिकार।।

तीन हजार लिए सैनिक को,पहुँचे प्लासी गाँव समीप।
शूर पचास हजार लिए था,स्वागत में फिर बंग महीप।।

भयभीत हुऐ अंग्रेज सभी,देखें तब वह जाफ़र मीर।
चुपचाप खड़ा रण भू में वो,देता था अपनों को पीर।।

प्लासी का युद्ध

परिणाम

सेठ जगत ने निष्ठा बेची,जाफ़र मील करे प्रतिकार।
रक्त कणों से लाल धरा तब,बंग नवाब हुए लाचार।।

ईस्ट कंपनी का नाम बढ़ा,क्लाइव ने जीता बंगाल।
पाँव जमाए अंग्रेजों ने,फिर भारत में दुर्दिन काल।।

जाफ़र मीर नवाब बने जब,क्लाइव को दी थी जागीर।

गद्दारी को भुगतें सदियाँ,पैरों में पड़ती जंजीर।।

बन कर आए थे व्यापारी,प्रान्तों पर करते अधिकार।
शासक बन बैठे भारत के,राष्ट्र सहे था पीर अपार।।

निर्णायक युद्ध रहा प्लासी का,फ्रांसीसी डच सबकी हार।
सिक्का चलता अंग्रेजों का,बंद किया सबका व्यापार।।

ईस्ट इंडिया कंपनी

(व्यापार से शासन)

जाफ़र के बेटे मीरन ने,वध का खेला नंगा नृत्य।
हाथी से कुचला दौला को,सड़कें देख रहीं थी कृत्य।।

गद्दी पर कठपुतली जाफ़र,अंग्रेजों ने पकड़ी डोर।
भूभागों पर कब्जा करने,चलते उत्तर भारत ओर।।

कोष भरा था धन से पूरा,बंग संपदा पर अधिकार।
सैन्य शक्ति अंग्रेज बढ़ाये,लक्ष्य रहा उनका विस्तार।।

शासन स्थापित अंग्रेजों का,युद्ध लिखे काला अध्याय।
बंगाल विजय का अर्थ हुआ,गद्दी पर थे वाइसराय।।

इतिहास बदलता पल भर में,देते अपने जब आघात।
खेल घिनौना राज प्रथा का,लेकर आया झंझावात।।

फकीर और सन्यासी विद्रोह

सन 1776 से आरंभ

मानव के अधिकार का,हनन करें अंग्रेज जब।
वशीभूत हो स्वार्थ के,दिए भयानक घाव तब।।
आंदोलन के अर्थ का,सार्थक कर उपयोग ,
भारत छोड़ो लक्ष्य रख,रार मचाता राष्ट्र अब।।

आंदोलन

मौलिक अधिकारों को जानें,रोटी कपड़ा और मकान।
राजा का कर्तव्य रहा ये,जन मानस का हो सम्मान।।

हर युग का ये सत्य रहा है,छिनते जब मौलिक अधिकार।
धूल चटाती जनता उनको,उर में लेकर फिर अंगार।।

बंग प्रजा के दुर्दिन आए,गोरों का सह अत्याचार।
प्रांत अकाल ग्रसित था भीषण,भूखी जनता थी लाचार।।

कर नियमों को जब बदला था,भूपुत्रों का सत्यानाश।
रोक लगाई तीर्थाटन पर,धर्म व्यथित हो घोर निराश।।

दूभर होगा कितना जीवन,चहुँ दिशि फैला था अँधियार।
नीति दमन की कब तक झेले,जनता लेती फिर प्रतिकार।।

फकीर और सन्यासी विद्रोह (1777)

एक समूह घुमंतू मुस्लिम,कहलाए वो बंग फ़कीर।
संकट उनपर मुख फैलाए,बात रही थी अति गंभीर।।

मार्ग कठिन पग-पग पर काँटे,साधन यह था यातायात।
धार्मिक यात्रा करते ज्ञानी,सह कर कितने ही आघात।।

एक प्रथा उस काल रही थी,धार्मिक कर पर था अधिकार।
जब दुर्दिन के बादल बरसे,टूट रहे थे घर परिवार।।

कर की राशि चुकाना दुष्कर,क्षुब्ध हुए सारे धनवान।
किसको-किसको कर देते वो,डोल रहा था नित ईमान।।

सन सत्रह सौ सतहत्तर था,आंदोलन फिर किए फकीर।
आरंभ किए विद्रोह तभी,खींची उनसे दीर्घ लकीर।।

फकीर और सन्यासी विद्रोह

विपदा सुरसा के मुख जैसी,झेल रहे थे बंग अमीर।
धार्मिक कर को बंद किया जब,भूखे मरते नंग फकीर।।

अपनों की पीड़ा जब देखी,काँप उठा मुस्लिम समुदाय।
निर्णय था फिर सोच समझ कर,लूट बची है एक उपाय।।

नेतृत्व फकीरों का करने,डोर पकड़ते फिर मजमून।
शाह चिराग अली संगी बन,करते उनके दुख को न्यून।।

रजपूते भी कूद पड़े थे,बंग पठान किए सहयोग।
गत सेना कब पीछे रहती,मिल कर काटे जड़ से रोग।।

धार्मिक भिक्षुक सन्यासी भी,झेल रहे थे कितने क्वाथ।
साथ भवानी पाठक आए,महिला देवी देतीं हाथ।।

आनंद मठ

सन्यासी विद्रोह पर आधारित 1882 में बंकिम चंद्र उपाध्याय जी द्वारा रचित उपन्यास

सन्यासी विद्रोह का,लिखे कथानक चंद्र।
अद्भुत कृति आनंद मठ,तोड़े सबकी तंद्र।।
तोड़े सबकी तन्द्र,क्रांति का बिगुल बजाया।
गहरा पड़ा प्रभाव,स्वप्न आजाद सजाया।।
पुस्तक पर प्रतिबंध,लगाए थे अधिशासी।
देश भक्ति के भाव,जगाते थे सन्यासी।।

फकीर और सन्यासी विद्रोह

भू हीन हुए थे बेचारे,करते थे गोरिल्ला युद्ध।
काल विषम जब आया तो,बन कर रहते कब तक बुद्ध।।

आग उदर में जब जलती थी,जीवन में भरता था रोष।
अन्न किसानों का लूटा फिर,धनवानों का लूटा कोष।।

मारामारी हाहाकारी,दिखती थी अब चारों ओर।
लूट खसोट जलाते फसलें,कहलाते थे डाकू चोर।।

कोष ब्रितानी का जो लूटें,निर्धन को वो देते बाँट।
पेट सभी का भरते थे वो,खाकर अँग्रेजों की डाँट।।

हिन्दू मुस्लिम स्कंध मिला कर,करते गोरों से विद्रोह।
भयभीत हुए अंग्रेज तभी,देखे अपना जब अवरोह।।

पिंजरा

(कैद पक्षी जैसी मनोदशा)

पिंजर में रहती चिड़िया जब,खो निजता सहती वह ताप।
अंतस घायल हो तड़पे फिर,अन्न लगे उसको अभिशाप।।
कौन सुने यह सत्य भयावह,मौन करे वह नित्य विलाप।
पंख रखे वह भोग रही दुख,अम्बर का नित ले परिमाप।।

बक्सर का युद्ध

गुलामी की बेड़ियाँ और अंग्रेजों का अत्याचार

बंग बिहार रहा विद्रोही,आंदोलन के वर्ष पचास।
रोक लगाने ताकत बल से,आए जनरल हेस्टिंग खास।।

शासन की मनमानी चलती,ईस्ट इंडिया का था राज।
युद्ध हुआ था बक्सर में फिर,मचती खुजली के सँग खाज।।

डलहौजी की नीति हड़पना,विचलित होते प्रांत नवाब।
मूक बने वो कब तक देखें,माँग रहे थे नित्य जवाब।।

संधि विलय की द्वेष रखे थी,गोद प्रथा का तर्क़ निषेध।
काले गोरे का भेद घृणित,भारत हित का करते वेध।।

नागरिकों ने अपशब्द सहे,देख विनाश रहा था देश।
ईसाई धर्म प्रचार करें,बदलें भारत का परिवेश।।

द्वितीय सर्ग

स्वतंत्रता आंदोलन

प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन

सन 1857 की क्रांति

असंतोष के सौ वर्षों में,घाव दिए थे सभी विभाग।
कारतूस में पशु चर्बी से,सैनिक दल को लगती आग।।

मैकाले की शिक्षा करती,भारत संस्कृति पर आघात।
गोरों का अत्याचार बढ़ा,काँपे थे सैनिक के गात।।

वर्ष अठारह सौ सत्तावन,नेक प्रयोजन का आरंभ।
मेरठ इसका केंद्र बना कर,तोड़ें अंग्रेजों का दंभ।।

विद्रोही सैनिक और पुलिस,का साझा था यह अभियान।
ग्रामीण हजारों में निकले,जनता लेती डोर कमान।।

सैन्य प्रभारी धन सिंह रहे,बागी नेता की पहचान।
मुक्त कराए कैदी सारे,कारावास रहा संधान।।

क्रांति मशाल

सैन्य विद्रोह से जनव्यापी विद्रोह

अधिकार छिने जब भी जग में,इतिहास लिखे नर! मौन रहे कब।
मन में बढ़ती जब द्वेष घृणा,जनमानस वो नित भेद सहे सब।।
रण भू पर युद्ध ठना फिर से,अरि का धरती पर रक्त बहे तब।
नव निर्मित भारत स्वप्न रहे,ललकार रहा युग नित्य कहे अब।।

सैन्य विद्रोह से जनव्यापी विद्रोह

कारावास जला विद्रोही,तब करते दिल्ली प्रस्थान।
लपटें चारों ओर उठी थीं,गाँव शहर बनते शमशान।।

आग लगी जो मेरठ में थी,पहुँची झाँसी और बिहार।
और अवध में बेगम हजरत,सैनिक का करतीं सत्कार।।

आंदोलन की चिंगारी जो,फैल रही थी चारों ओर।
स्वप्न सँजोये आजादी अब,देख रही थी नूतन भोर।।

हथियार पुराने सेना के,कब तक लड़ सकते थे युद्ध।
और रियासत मूक खड़ीं जो,चालें उनकी करतीं क्रुद्ध।।

स्वप्न कुठाराघात सहा था,कुचला जाता जब संग्राम।
तब लक्ष्य फिसलता हाथों से,सपने लेते अल्प विराम।।

मैग्नाकार्टा

व्यवस्था पर कानून का शासन
लोकतांत्रिक व्यवस्था के विकास का महत्वपूर्ण पड़ाव

नयी नीतियों ने लिखी जो कहानी,फिरंगी करे थे वही क्षुद्रता।
खड़ा काल प्रत्यक्ष ये प्रश्न पूछे,तुम्हीं क्या सहोगे सदा क्रूरता।।
नहीं न्यूनता घेर बैठी रही है,सहेगी सदी क्यों यही क्षीणता।
लिए क्रांति की लौ जगा चेतना को,यही राष्ट्र के धर्म की पूर्णता।।

1857 की क्रांति के परिणाम

कंपनी शासन का अंत तथा शासन ब्रिटिश क्राउन के अधीन

नीति नियम से वंचित बागी,गोरों को फिर मिलती जीत।
पर नींद उड़ी अंग्रेजों की,सोचें तब चालें विपरीत।।

आधार हिला अंग्रेजों का,परिवर्तन की क्रांति महान।
भारत का इतिहास अमर हो,गाता घटना का गुणगान।।

शोणित कण से लाल धरा ने,जनमानस की बदली सोच।
रक्त रगों में दौड़ पड़ा था,शेष नहीं था अब संकोच।।

चोट सही जो अंग्रेजों ने,लाए वो फिर नव प्रस्ताव।
ईस्ट कंपनी का अंत किया,शासन में करते बदलाव।।

वर्ष अठारह सौ अट्ठावन,राज कंपनी का था अंत।
ताज ब्रिटिश फिर धारण करते,मुख में रखते दूजे दंत।।

ईस्ट इंडिया कंपनी का अंत(1858)

गवर्नर जनरल का पद अब वायसराय

नूतन पद नाम समिति बनती,और गवर्नर जनरल राज।
प्रांतों में वायसराय बने,शासन के सब करते काज।।

कानूनी पत्र फिरंगी के,उसमें नियमों का उल्लेख।
नव्य सुधार करें जब रानी,बारीक रही फिर से रेख।।

रीति रिवाजों का संरक्षण,मैग्नाकार्टा में स्वीकार।
निष्पक्ष रहें कानून सभी,सरकारी में सम अधिकार।।

फंद गले में फिर से पड़ती,छल का बढ़ता जाता जाल।
कथ्य पुराने नव पहनावा,भारत जनता थी बेहाल।।

अंग्रेजों ने जब देखा ये,सेना चलती उल्टी चाल।
भारत सैनिक के पद छीने,और फँसाया अपने जाल।।

राष्ट्रीय चेतना

क्रांति से राष्ट्रवाद की भावना बलवती हुई और राष्ट्रीय आंदोलन की नींव पड़ी

जगी राष्ट्र निर्माण की चेतना जो,चले वीर निर्भीकता को धरे।
सभी स्वार्थ या मोह को तोड़ पाते,कि उद्देश्य में उच्चता को धरे।
मिले प्राण की शक्ति माँ भारती को,सिपाही सभी एकता को धरे।
रहा हिंद संकल्प में ज्ञानियों के,चले शूर भू अस्मिता को धरे।।

गौरवशाली भारतीय विरासत का पुनरुद्धार

क्रांति विफलता कौन कहेगा,एक अलख का प्रादुर्भाव।
नूतन भारत कोख पले था,बीज पड़ा था जब अलगाव।।

आक्रोश जनमता जब मन में,नवचेतन का फिर संचार।
अंतस पीड़ा खौल रही थी,माँगे मिलता कब अधिकार।।

छोटे-छोटे राज्य बँटे जो,उसमें थे उद्योग कुटीर।
धार्मिक एका भाव प्रबल में,भारत प्रेम जगाएँ वीर।।

अनगिन घाव दिए संस्कृत को,अंग्रेजी का बढ़ता मान।
वर्ग नया उत्पन्न हुआ फिर,जो गाता था संस्कृति गान।।

जागृति आँखे खोल रही थी,नींव रखी भारत आज़ाद।
कारण कौन गिनाने बैठे,उर में छाया था उन्माद।।

नवजागरण

जो शिक्षा पाश्चात्य प्रसारित,जोड़ रही थी भारत एक।
साधन यातायात बढ़ा जब,भारत हित में कार्य अनेक।।

कान कहीं से कैसे पकड़ो,सत्य रही थी ये ही बात।
आजादी का स्वप्न सजाए,बढ़ता जनता का अनुपात।।

चिंगारी नेता सुलगाएँ,आंधी फिर फैलाती आग।
कुचले शोषित जो वर्षों से,गाते थे आजादी राग।।

भारत हित की बातें सोचें,वर्ष लगे थे बीस पचीस।
कार्य प्रणाली तैयार करी,रह-रह कर उठती थी टीस।।

करवट बदलें जब इच्छाएँ, मन में जागे नव विश्वास।
अध्याय नया अब लिखना था,रचना था नूतन इतिहास।।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना
(28 दिसम्बर 1885)

बिल इर्विन की वह आड़ लिए,रखते मन में कुविचार से।
सब नीति उपेक्षित ही रखते,नित शोषण के हथियार से।।
अभिमान जगा अखबार लिखे,हित भारत के अधिकार से।।
फिर भारत एक समूह बना,कब पार लगे तकरार से।।

भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस

रोल्ट नियम करता था शोषण,और बढ़ा अल्बर्ट विवाद।
क्रांति विफल से जगी चेतना,देख रही चहुँ ओर विषाद।।

स्वाभिमान सर चढ़ कर बोले,प्रेस उठाए तब आवाज।
एक संगठन अब ऐसा हो,बाँध सके जो देश समाज।।

मास दिसंबर की अट्ठाईस,अठरह सौ पच्चासी वर्ष।
राष्ट्रीय कांग्रेस बना कर,ए.ओ. ह्यूम मनाते हर्ष।।

आंदोलन का रूप संगठित,ऐसा करते नेक विचार।
संस्था का उद्देश्य यही था,रोकें गोरों की सरकार।।

देख रहे थे अपने हित को,राज ब्रिटिश को मिलती राह।
शासन हेतु लगे आवश्यक,भारत के मानस की चाह।।

व्योमेश प्रथम अध्यक्ष बने,लक्ष्य रखे थे भारत एक।
आज़ादी का युद्ध लडें मिल,मानव का जीवन हो नेक।

महिला भागीदारी बढ़ती,विस्तृत होता जाता क्षेत्र।
नित्य विचार विमर्श करें जब,खुलते जाते सबके नेत्र।।

बंग भंग (16 अक्टूबर 1905)

मुस्लिम बहुल प्रान्त का सृजन करने के उद्देश्य से भारत के बंगाल को दो भागों में बाँट दिये जाने का निर्णय लिया गया था।

राष्ट्र भावना देख कर,ब्रिटिश हुए संत्रस्त।
चाल कुटिल वो सोचते,कर दें कैसे पस्त।।
हिन्दू मुस्लिम एकता,उन्हें करे बैचैन,
नहीं बनीं यदि नीतियाँ,होगा सूरज अस्त।।

फूट डाल कर राज करो की नीति

हिन्दू मुस्लिम साथ लड़े थे,बीत गए थे कितने वर्ष।
बात पचाते गोरे कैसे,देखें जब साझा संघर्ष।।

पूरा भारत एक हुआ जब,जनता में था कितना जोश।
जोश यही फिर उन्हें डराता,और उड़ाता उनके होश।।

भारत में बंगाल निशाना,रहते उस पर आँखे गाड़।
खेला धार्मिक खेल घिनौना,कर उसके दो टुकड़े फाड़।।

साथ रहे मुस्लिम आबादी,सर्वप्रथम लाए प्रस्ताव।
मैमन चटगाँव जिला ढाका,भोग रहे थे दुख अलगाव।।

कार्य घृणित गोरे कर्जन का,नागरिकों का कर अपमान।
लोक विरोधी नीति नियम ने,छीनी भारत की पहचान।।

बंगवासियों की एकता को भंग कर देने का प्रयास,इतिहास तथा भाषा पर घृणित प्रहार।

पश्चिम बंग बिहार उड़ीसा,अधुना क्षेत्र रहे तब एक।
बंग बँटा पूरब पश्चिम में,तर्क दिए बँटवारा नेक।।

क्षेत्र बँटे जो पूर्व जिले के,जोड़ा प्रांत असम के साथ।
जनता को रास नहीं आया,कुछ मुस्लिम ही देते हाथ।।

एक नया फिर प्रांत बनाकर,करते गोरे नव्य प्रयोग।
लक्ष्य कुटिल बँटवारे का,दुर्बल हों भारत के लोग।।

बीस सदी आरंभ हुई थी,सोलह अक्टूबर लाया शोक।
हिंदू मुस्लिम मतभेद बढ़ा,मग्न हुआ था गोरा लोक।।

बाँट रहे थे जनमानस को, बाँटा भारत माँ का धर्म।
खाई चौड़ी जो तब करते,भोगे अब तक उनके कर्म।।

बंग भंग के परिणाम

एकता

जनता जब नींद भगा उठती,नव भारत का फिर स्वप्न पले।
जब एक सभी मिल कर रहते,तब आँख दिखाकर कौन
छले।।
शुभ भाव लिए जन ऐक्य रखें,तब शत्रु रहे पदत्राण तले।
अनुकूल रहे परिणाम सभी,तब शीश उठाकर राष्ट्र चले।।

स्वदेशी आंदोलन

वायसराय भवन शिमला से,कर्जन लार्ड दिए आदेश।
आग बबूला सारी जनता,क्रोध भरे मन में आवेश।।

भेद बढ़ाकर राज करेंगे,गोरे शासन का उद्देश्य।
बंगाली आबादी बाँटी,देश समझता था परिपेक्ष्य।।

देश विरोध प्रदर्शन करता,हिंदू मुस्लिम होते एक।
बाँध कलाई पर राखी फिर,कहते भारतवासी नेक।।

जन्म स्वदेशी आंदोलन का,वस्तु विदेशी कर दी बंद।
बिन त्योहार जला कर होली,अंग्रेजों के डाले फंद।।

लक्ष्य आत्मनिर्भरता रखकर,खोले थे देशी उद्योग।
कार्य सफलता सर चढ़ बोले,भारत जनता भोगे भोग।।

स्वदेशी उद्योगों की स्थापना

जनता तथा श्रमिकों में भी राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ।

जनमानस पीर सहे कबसे,कितने दिन वो चुपचाप रहे।
वह पिंजर में सहमें तड़पे,जब शासन के नित पाप रहे।।
प्रतिकार किया फिर भारत ने,नर धैर्य धरे तट नाप रहे।
फिर क्रांति मशाल जला कहते,धरती पर क्यों अभिशाप रहे।।

सांस्कृतिक प्रगति और शिक्षा का प्रसार

हैंडलूम मिल खादी कपड़े,उत्पादन करते आरंभ।
साबुन माचिस सम वस्तु बना,तोड़ रहे अंग्रेजी दंभ।।

छात्र सहे अत्याचार दमन,आन्दोलन फिर होता उग्र।
नारी की भागीदारी से,अंग्रेजों की मति होती व्यग्र।।

एक अनोखा परिणाम रहा,काव्य रचा भरते उत्साह।
अरविंदो घोष बने नायक,शिक्षा मंदिर की थी चाह।।

आग्रह जनता से यह करते,शासन को मत दो सहयोग।
उत्पीड़न का अभिशाप रुके,भागे जड़ से अब यह रोग।।

जनमत तैयार किये सबने,क्यों भारत को देते घाव।
क्रांति स्वदेशी की आयी फिर,एका का आया था भाव।।

उग्र राष्ट्रवाद का विकास

राष्ट्रीय कॉंग्रेस के विचारों में मतभेद

पढ़ते जो इतिहास को,पीड़ा अपरंपार।
कुटिल विभाजन नीति से,बहे अश्रु की धार।।
बहे अश्रु की धार,बीज जो जब थे रोपे।
फसल आज तैयार,पीठ में खंजर घोपे।।
सत्य छिपा है मौन,दोष दूजे पर मढ़ते।
झेले दंश समाज,झूठ को नित ही पढ़ते।।

विभाजन की नींव

धर्म के आधार पर

भेद विचारों में बढ़ता था,एक माँगता अपना धर्म।
पूर्ण स्वराज्य लिए सपने का,गरम दलों का अपना मर्म।।

सम्मान गरम दल का बढ़ता,चिंतित थी गोरी सरकार।
पक्ष रखें फिर मार्ले-मिंटो,डर बनता था जो आधार।।

हिन्दू मुस्लिम में भेद हुआ,खींचे आपस में वह कान।
बंग विभाजन चोट दिया जो,बीजारोपण पाकिस्तान।।

बंगाली संख्या अल्प करा,हिन्दू मुस्लिम नित्य तनाव।
आंदोलन को कमजोर करें,आपस के ही उपजे भाव।।

पंथ नरम का लक्ष्य विफल जो,युद्ध लड़ें अब नेता उग्र।
अंग्रेज हुकूमत काँपी थी, दिन प्रतिदिन वह होते व्यग्र।।

राष्ट्रीय कॉंग्रेस का विभाजन

सूरत अधिवेशन में 1907 में कांग्रेस का विभाजन गर्म दल और नर्म दल में हुआ।

सूरत में जब थी सभा,हुए सभी निरुपाय।
भारत के इतिहास का,था काला अध्याय।।
था काला अध्याय,दलों में बँटते जाते।
भटक रहा था लक्ष्य,अधूरे सपने पाते।।
नरम सोच अनुसार,ब्रिटिश की लगे जरूरत।।
यदि हों गरम विचार,लगे आतंकी सूरत।।

सूरत अधिवेशन (1907)

अधिवेशन की अध्यक्षता रास बिहारी घोष ने की थी।

लगभग वर्ष पचीस रहे थे,मिल जुल कर जब करते काम।
कांग्रेस बँटी दो दल में जब,भूल गए इसका परिणाम।।

सोच विचार अलग जब रहते,कौन करे किसको स्वीकार।
गंगाधर,मोतीलाल हुए,इन दो दल के तब आधार।।

उच्च जनों का एक धड़ा था,इंग्लिश भाषी का वह वर्ग।
गोरों में विश्वास उन्हें था,मिल कर लिख दें नूतन सर्ग।।

लाख प्रयास नरम दल के थे,पर गोरों की भक्ति अपार।
सामाजिक श्रेणी का अंतर,घात सहे निज सोच उदार।।

संयोजक सरकार बने अब,ढूँढ़ रहे थे उनकी छाँव।
गरम दलों को तब लगता था,छूट रहा है उनका गाँव।।

मुस्लिम लीग (1906)

मुस्लिम नेताओं ने ढाका के नवाब सलीमुल्ला के नेतृत्व में ढाका में 'मुस्लिम लीग' की स्थापना की।

सीख दिए सर सैयद थे यह,दूर रहो तुम शासन से अब।
खोट ब्रिटेन लिए रहता फिर,बात बने निषकासन से अब।।
मुस्लिम बाध्य हुए फँसते नित,राज मिले नव आसन से अब।
मुस्लिम लीग बना कहते वह,दूर हुए सब त्रासन से अब।।

मुस्लिम लीग

मुस्लिम दूर रहें सत्ता से,सर सैयद ने दी थी सीख।
घटना क्रम कुछ ऐसे आये,अधिकारों की माँगें भीख।।

खाई को नित गहरा करते,गोरे मुस्लिम अब थे साथ।
नीति दमन की फिर छोड़े वो,धर्म विशेष लिए थे हाथ।।

अधिवेशन में प्रस्ताव रखा,वर्ष रहा था छह उन्नीस।
मुस्लिम लीग बना कर कहते, हम मुस्लिम हैं उनसे बीस।।

आगा खाँ नेतृत्व किये थे,लक्ष्य रहा था मुस्लिम लीग।
अनुरोध नवाब सलीमुल्ला,करते भावों में फिर भीग।।

कुविचार रखे मन में ये सब,करते अंग्रेजों की भक्ति।
अधिवेशन में नीति बनी ये,क्षीण करे भारत की शक्ति।।

बंगाल के विभाजन ने सांप्रदायिक विभाजन को भी जन्म दे दिया/

मिंटो वायसराय बने जब,शासन में करते बदलाव।
पासा फेंके यह लोभ दिए,हिन्दू के प्रति रख दुर्भाव।।

मुस्लिम मतदान अलग करते,उनकी सब माँगे स्वीकार।
आया था उन्नीस नवम जो,छीने हिन्दू के अधिकार।।

चिर काल प्रभावी ये होगा,भारत झेलेगा फिर दंश।
नीति कुटिल पर मुस्काये थे,बिखरेंगे जब उसके अंश।।

मनहूस रहा था तीस दिसंबर,छात्र अलीगढ़ के थे साथ।
अपने को अंग्रेज सिपाही,कह गोरों को देते हाथ।।

शिमला बाद करांची पहुँचे,नीति बना कर काम तमाम।
मिंटो माले खेल रहे थे,ढाल बने अध्यक्ष इमाम।।

बंग भंग की समाप्ति (1911)

जॉर्ज पंचम के नेतृत्व में पश्चिम और पूर्व बंग के बँगला भाषी इलाकों को एक प्रांत में लाने का आदेश किया गया।

ख्याति मिली थी आंदोलन को,बढ़ता जाता नित्य विरोध।
गर्म तवे पर रोटी सेंकें,मूल विषय का रख कर बोध।।

जोड़ी लाल-बाल की आयी,घृत डाले थे उसमें पाल।
पूरे भारत में सुलगाते,हाथ लिए थे क्रांति मशाल।।

आंदोलन छह वर्ष चला था,कारावास बना था धाम।
पैर नहीं पीछे खींचे थे,कष्ट सहे भी करते काम।।

शासन में नूतन केंद्र बना,कलकत्ता को पीछे छोड़।
दिल्ली में फिर डेरा डाले,ढूँढ़ रहे थे इसका तोड़।।

आंदोलन ने बैचैन किया,दिल्ली में बैठा दरबार।
पंचम जार्ज समाप्त किये फिर,बंग भंग का कष्ट अपार।।

दिल्ली लाहौर षड्यंत्र(1912)

गोरों का शासन केंद्र जब,कलकत्ता से दिल्ली चला।
आयोजन होता भव्य जो,यह भारत वीरों को खला।
हार्डिंग हत्या षड्यंत्र रच,अंग्रेजों को संदेश दें
पराधीनता अभिशाप है,अब तक तुमने हमको छला।।

लार्ड हार्डिंग पर 23 दिसम्बर 1912 को चाँदनी चौक में बम फेंका गया।

रासबिहारी बोस प्रणेता,साजिश को देते अंजाम।
शोभा यात्रा हार्डिंग की थी,उसका करते काम तमाम।।

मौका पाकर बम फेंक दिया,लक्ष्य गया था उनसे चूक।
'विश्वास' धमाका कर भागे,पर अंतस में लेकर हूक।।

रासबिहारी बोस चतुर थे,हमले का निंदा अभियान।
संदेह नहीं उनपर होता,ऐसे थे वह वीर महान।।

फांसी का दंड मिला कुछ को,या आजीवन कारावास।
पर एक धमाका हिला गया,अंग्रेजों को दे संत्रास।।

नीतियों में टकराव

विरोध बढ़ा जनमानस में, मतभेद विभाजन को सहता।
अखंड रहे मम राष्ट्र सदा,यह लक्ष्य लिये उर में रहता।।
मशाल जला अब क्रांति करो,यह बात वही सबसे कहता।
प्रचार प्रसार करे जब थे,टकराव लिए सपना ढहता।।

आंदोलन की विफलता

नीति विरुद्ध दबीं आवाजें,रास न आई फिर कांग्रेस।
स्वार्थ परम पर डेरा डाले,माँग रहा था मुस्लिम देश।।

अंग्रेजों की नीति सफल थी,बढ़ता जन के मध्य तनाव।
शांत कहाँ अब तक हो पाया,झेल रहे हैं अब भी घाव।।

दंड कठोर दिए तब गोरे,आंदोलन का करते अंत।
नारों पर प्रतिबंध लगाकर,चोट दिए जीवन पर्यंत।।

नेतृत्व पड़ा था ढ़ीला जब,नेता पड़ते थे कमजोर।
सन्यास लिए कुछ छोड़ चले,आयी विपदा फिर घनघोर।।

पूर्ण स्वराज्य सुने जब नारा,लोकमान्य को करते बंद।
तोड़ कमर दी आंदोलन की,क्रांति मशाल करें वो मंद।।

गांधी

लाठी के हथियार से,आया स्वर्णिम काल।
लड़ी लड़ाई देश की,बिना खड्ग या ढाल।।
बिना खड्ग या ढाल,सत्य का पाठ पढ़ाया।
रहा अहिंसा धर्म ,मौन उपवास बताया ।।
धोती थी पोशाक,अटल उनकी कद काठी ।
खादी रहा विचार,अमर है गाँधी लाठी ।।

मोहनदास करमचंद गाँधी का भारत आगमन (1915)

पग पग पर अपमान सहे था,भारत का बैरिस्टर एक।
सौतेला भाव व्यथित करता,पीड़ा सहता नित्य अनेक।।

खेतिहर मजदूरों के अगुआ,गाँधी करते तब संघर्ष।
अफ्रीका वासी देख रहे थे,पल-पल ही उनका उत्कर्ष।।

शुद्धिकरण सँग सत्याग्रह का,अपनाए गाँधी सिद्धांत।
और अहिंसा के नियमों से,देख रहे थे देश वृतांत।।

एक विजेता अफ्रीका से,लौट रहा था अपने देश।
नस्ली भेद मिटे जनता का,शुद्ध करे भारत परिवेश।।

देश भ्रमण पर निकले गाँधी,देखा जनमानस का त्रास।
आजादी अब पानी होगी,संकल्प लिए मोहनदास।।

लखनऊ अधिवेशन (1916)

कांग्रेस विभाजन को भुगते,भारतवासी कुछ दस वर्ष।
और रसातल में जाते सब,दिन प्रतिदिन होता अपकर्ष।।

सन सोलह में लखनऊ चले,पूर्ण स्वराज्य लिए प्रस्ताव।
मान लिए सब मुस्लिम माँगे,एक गठन का प्रादुर्भाव।।

अधिवेशन में प्रण लेते सब,भेद मिटाकर रहना साथ।
कांग्रेस दलों के एका में,मुस्लिम देते अपना हाथ।।

लखनऊ मगन हो देख रहा,बाल-तिलक जिन्ना का यत्न।
हिंदू मुस्लिम भेद मिटाकर,नेक प्रयास किये दो रत्न।।

एनी बीसेंट सुलहनामा,अब कांग्रेस व लीग समीप।
साझा माँगे फिर गोरों से,भारत का हो नव्य महीप।।

जलियांवाला बाग कांड (1919)

1919 की बैशाखी भारतीयों को सदियों तक गहरा घाव दे गया

भारत का इतिहास कलंकित,झेल गया जनमानस गोली।
रक्त बहा जलियां सिसका जब,खेल रहा बिन मौसम होली।।
लौ बुझती जनजीवन की तब,काँप उठी फिर आगत डोली।
मोल चुका कर प्राण चले जब,क्रांति लिखे तब नूतन बोली।।

इतिहास का काला दिन

विश्व प्रथम जब युद्ध हुआ था,भारत दे गोरों का साथ।
तेरह लाख लड़े सैनिक तब,और हजारों छोड़ें हाथ।।

गोरों का रोलट एक्ट बना,भारत का काला कानून।
छीन रहे अस्तित्व फिरंगी,प्राप्त नहीं रोटी दो जून।।

अंग्रेजों की नीति दमन की,सेंध लगा कर लेते टोह।
रोल्ट नियम को रोक रहे थे,पंजाब करे फिर विद्रोह।।

जिन्ना,मोहन ने त्यागा पद,पूरा देश करे हड़ताल।
गाँधी जी करते सत्याग्रह,हिंसा करते पर कुछ लाल।।

कष्ट दिए नेताओं को फिर,और किए थे उनको बंद।
जनरल डायर की गोली भी,छीन रही थी तब आनंद।।

निहत्थे भारतीयों की भीड़ पर जनरल डायर ने गोली चलाई ,भीषण नरसंहार हुआ

कूप गवाह बना लाशों का,और मची थी चीख पुकार।
क्षोभ हुआ फिर लिखते-लिखते,पढ़कर वह कपटी व्यवहार।।

विश्व करे जब इसकी निंदा,डायर ने छोड़ा था ताज।
आज़ादी के मतवालों ने,बाँध लिया फिर सकल समाज।।

टैगोर प्रभाव बढ़े नित था,पाए नाइटहुड सम्मान।
नाथ विरोध दिखा लौटाते,और बचाते भारत आन।।

बच्चा-बच्चा तब आहत था,माटी छूकर ले संकल्प।
आग बढ़ी पूरे भारत में,हो गोरों का शासन अल्प।।

चीख उठे थे घाव उधम के,ठान लिया था तब प्रतिकार।
सन चालीस गवाह बना फिर,गोली डायर का आहार॥

असहयोग आंदोलन (1920)

अंग्रेजों द्वारा प्रस्तावित अन्यायपूर्ण कानूनों और कार्यों के विरोध में देशव्यापी अहिंसक आंदोलन

आजादी के मूल में,था भारत उत्कर्ष।
आंदोलन में साथ दे,मिले सभी को हर्ष।।
मिले सभी को हर्ष,हृदय में जोश जगाए।
असहयोग के साथ,ख़िलाफ़त लक्ष्य बनाए।
हिन्दू मुस्लिम संग,श्रमिक ने की बर्बादी।
करते सभी विरोध,आस पूरी आजादी।।

असहयोग आंदोलन

सरकारी कार्यों से इस्तीफा, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
टैक्स चुकाने से मना किया गया।

चार सितंबर बीस रहा था,कलकत्ता में यह प्रस्ताव।
टैक्स चुकाना बंद करो सब,अंग्रेजों को दो अब घाव।।

न्यायालय विद्यालय छोड़ो,संबंधों का कर दो त्याग।
अति शीघ्र यही संभव कर दो,चारों ओर लगा दो आग।।

गाँधी का उद्देश्य यही था,संघर्षों का हो विस्तार।
प्राप्त स्वराज करेगा भारत,पालन हो यदि उचित प्रकार।।

वर्ग सभी हड़ताल किए थे,और वकील दिए थे घात।
भू पुत्र नहीं देते फिर कर,पर करते मनमानी बात।।

अंग्रेजों की नींव हिली थी,जब लाखों का था सहयोग।
और प्रशासन झेल रहा था,खुजली दाद सभी फिर रोग।।

खिलाफत आंदोलन (1921-22)

प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय मुस्लिम का अंग्रेजों से मतभेद

विश्व प्रथम जब युद्ध लड़ा था,तुर्की को मिलती थी हार।
नीति कठोर बनी गोरों की,तुर्क ख़लीफ़ा पर थी रार।।

एक ख़िलाफ़त आंदोलन को,मुस्लिम देते फिर आकार।
असंतोष फैला था उनमें,आँख दिखाएँ वह दो चार।।

युद्ध स्वराज-ख़िलाफ़त लड़ते,आंदोलन में मिलकर साथ।
गाँधी जी नेतृत्व किए थे,राष्ट्र मिलाए उनसे हाथ।।

बंधु अली एकत्र हुए थे,और बढ़ाते नित्य दबाव।
चितरंजन रहमान मुजीबर,आज़ाद दिए उनको घाव।।

हिन्दू मुस्लिम एका को तब,गाँधी ने दी नव पहचान।
आंदोलन सत्याग्रह ने फिर,और बढ़ाया उनका मान।।

असहयोग आंदोलन की विफलता

आंदोलन संदर्भ में,सबके अपने तर्क।
पाँच वर्ष के काल का,होता बेड़ा गर्क।।
होता बेड़ा गर्क,नाम सब चाहें लेना।
आपस के मतभेद,नहीं चाहें कुछ देना।।
करी शांति फिर भंग,नहीं नियमों का पालन।
बिखरे जाते स्वप्न,खत्म होता आंदोलन।।

चौरी चौरा कांड (1922)

प्रदर्शनकारियों की पुलिस थाने में आगजनी

चौरी चौरा कांड हुआ जब,किया निहत्थों पर था वार।
एक समूह किसानों का फिर,करे पुलिस पर अत्याचार।।

आग लगायी थी थाने को,मौत पुलिस की बनती काल।
आंदोलन हिंसक होता जो,नियमों की फिर खींचे खाल।।

घोर विरोधी हिंसा के थे,गाँधीजी के काँपे प्राण।
आंदोलन को बंद किया था,सोचें जनता का कल्याण।।

यह निर्णय फिर किसको भाता,बिस्मिल का था तर्क विरोध।
आंदोलन में सपने पलते,आज़ादी का रख कर बोध।।

अभियुक्तों का केस लड़े थे,मालवीय को मिलती जीत।
कितनी फाँसी रोकी थी तब,मोहन की थी भारत प्रीत।।

आंदोलन समाप्त करने पर भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस और मुस्लिम नेताओं के बीच दरार

अभियुक्त उनीस चढ़े फाँसी,गोरों की सत्ता में छेद।
चौरी चौरा मंडी में फिर,देश विदेश करे तब भेद।।

आंदोलन यदि चलता होता,शीघ्र हुए होते आज़ाद।
गरम दलों का कथ्य यही था,भगत सिंह ने फूँका नाद।।

गाँधी कैद रहे वर्षों तक,राजद्रोह का था आरोप।
कानून खड़ा लाचारी में,जनमानस के उर में कोप।।

'केसर-ए-हिंद' उपाधि मिली,गोरों का जो गाँधी गान।
भारत हित सर्वोपरि रख कर,मोहन करते वापस मान।।

काकोरी कांड (9 अगस्त 1925)

हथियार खरीदने के लिये अंग्रेजों का खजाना लूट लेने की घटना

असहयोग वापस हुआ,व्यथित हुए कुछ लोग।
क्रांतिवीर उस काल के,करते नव्य प्रयोग।।
युद्ध बिना हथियार के,लड़ता है फिर कौन?
धन ही संभव अब करे,दूर गुलामी रोग।।

हिंदुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन के क्रांतिवीरों द्वारा इस घटना को अंजाम दिया गया

आंदोलन मद्धिम पड़ता था जब,गाँधी खींचे वापस पैर।
धन आवश्यक होता जाता,तभी चुके गोरों से बैर।।

संविधान का ज्ञापन लेकर,नेता पहुँचे थे बंगाल।
नाथ शचीन्दर कैद हुए थे,और चटर्जी फँसते जाल।।

बिस्मिल रामप्रसाद उठाते,अपने कंधों पर फिर भार।
अति अनिवार्य हुआ धन दौलत,क्रय करना उनको हथियार।।

बिस्मिल नेतृत्व लिए चलते,साथ चले थे तब दस वीर।
सरकारों का लूट खजाना, हरनी थी जनमानस पीर।।

अशफाक,मुरारी,लाल मुकंदी,सब गाड़ी में हुए सवार।
आजाद,लाहिड़ी,केशव मिल,किए ट्रेन पर तब अधिकार।।

काकोरी के वीरों को नमन

शत बार प्रणाम तुम्हें करते,हँसते-हँसते तुम झूल गए।
इतिहास गवाह बना इसका,अपने दुख को तुम भूल गए।।
वह बिस्मिल ठाकुर लाहिड़ थे,चुनते पथ के जब शूल गए।
अशफ़ाक़ चले उनके सँग जो,तब कंटक मार्ग बबूल गए।।

काकोरी कांड - फाँसी की सजा

सन पच्चीस अगस्त नवम थी,लूटा जब सरकारी कोष।
क्रांतिवीर की सीधी टक्कर,अंग्रेजों में बढ़ता रोष।।

चोट मिली फुफकार रहे थे,कैद किए फिर वीर सपूत।
आजीवन कारावास दिए,या फंद गले जीवन आहूत।।

रँगते चोला जब बासंती,अंग्रेजों का डोला ताज।
गीत सरफरोशी का गाते,भारत की बनते आवाज।।

सरकारी अधिवक्ता से फिर,नहीं बने बिस्मिल का काम।
स्वयं मुकदमा लड़ते अपना,और बहस का होता नाम।।

एक दिवस ही सजा मिली थी,और जेल में आया काल।
हँसते-हँसते फाँसी चढ़ते,भारत माँ के चारों लाल।।

साइमन कमीशन (8 नवम्बर 1927)

भारत में संविधान सुधारों के अध्ययन के लिये

जनता थी तब कष्ट में,दंश गुलामी झेल।
समिति बनी थी साइमन,चले दमन का खेल।।
चले दमन का खेल,करें चौड़ी वह खाई।
समझें अनपढ़ तुच्छ,सभी माँगे ठुकराई।।
लागू जो कानून,कहाँ फिर सहते बनता।
प्रतिनिधि थे अंग्रेज,नहीं भारत की जनता।।

साइमन कमीशन

आठ नवंबर सन सत्ताईस,सात जनों का एक समूह।
नव्य विधान बनाते गोरे,प्रांत रियासत का हो व्यूह।।

भारत का उसमें एक नहीं, केवल गोरों का आयोग।
और समिति स्वीकार नहीं थी,बहिष्कार फिर करते लोग।।

साइमन कमीशन का होता,भारत में फिर तीव्र विरोध।
राय लाजपत नेतृत्व किए,काले झंडे से प्रतिशोध।।

लाहौर विजयवाड़ा पूना,वापस जाओ का उदघोष।
जमकर लाठी बरसी सबपर,दिए साइमन को सब दोष।।

वल्लभ पंत अपंग हुए थे,और गवाएँ लाला प्राण।
क्रांतिवीर सब व्यथित हुए थे,भगतसिंह प्रत्यक्ष प्रमाण।।

साइमन कमीशन

खून के बदले खून

लहु का बदला लहु से चुकते,अब वीर सभी यह ठान लिए।
उस सांडस से प्रतिशोध चुका,फिर वीर सपूत निदान दिए।।
बम फेंक सकें जब मध्य सभा,हित देश रहे हिय मान दिए।
जब मौत सजा मिलती उनको,उसका हँस के सब पान किए।।

क्रांतिकारियों द्वारा लाला लाजपतराय की मौत का बदला

अंतिम शब्द रहे लाला के,चोट रहेगी पत्थर मील।
लाठी जो बरसी है तन पर,ब्रिटिश कफ़न की अंतिम कील।।

अपमान हुआ था भारत का,व्यथित हुए शेखर आजाद।
राजगुरु सुखदेव भगत सिंह,करते गोरों को बर्बाद।।

स्कॉट समझ सांडर्स को मारा,उस पर गोली चली अनेक।
भगत सिंह और राजगुरु ने,बांध दिया फिर भारत एक।।

अंग्रेजी सत्ता काँपी थी,कागज चिपके हर दीवार।
हिंदुस्तान रिपब्लिक बदला,लाला की हत्या आधार।।

वेश बदल भागे सेनानी,लिखने को नूतन इतिहास।
असेंबली में बम फेंकेगें, क्रांति वीर का यही प्रयास।।

असेंबली बम कांड (8 अप्रैल 1929)

असेम्बली में खाली स्थान पर बम फेंककर गोरों को संदेश

बहरे जब सुनते नहीं,करो उच्च विस्फोट।
पर्चे में लिखते यही,नहीं नियत में खोट।।
नहीं नियत में खोट,किया था आत्मसमर्पण।
नीति नहीं मंजूर,करे नियमों का तर्पण।।
गले लगाकर मौत,दिए संदेशे गहरे।
गोरे सुन लो बात,नहीं हम गूँगे बहरे।।

'पब्लिक सेफ्टी बिल' और 'ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल' जैसे दमनकारी क़ानून का विरोध

भगत सिंह ,बटुकेश्वर पहुँचे,असेंबली में भारी भीड़।
करना कर्म महान उन्हें था,और बसाना अपना नीड़।।

कानून बनाते गोरे जब,दो नियमों पर रहा विवाद।
वायसराय उठे जैसे ही,बम फेंक कहें जिंदाबाद।।

इंकलाब फिर गूँज रहा था,वहीं खड़े थे दोनो वीर।
बाँट रहे थे पर्चे सबको,एक निशाने से दो-तीर।।

आत्मसमर्पण कर मतवाले,गाते आजादी के गीत।
भारत माँ का कर्ज चुकाने,करें मौत से दोनों प्रीत।।

हिंसक अपराधी क्यों कहते,आरोपों को देते छील।
मान रहे सब नेता अपना,लोग सुने जब सत्य दलील।।

लाहौर अधिवेशन (दिसम्बर 1929)

कांग्रेस के पूर्ण स्वराज का घोषणा-पत्र

पूर्ण स्वराज मिले भारत को,गोरे ढूँढ़े दूजा ठौर।
लक्ष्य प्रमुख अब यही रहेगा,कहता अधिवेशन लाहौर।।

अध्यक्ष जवाहर का नारा,अंग्रेजों को फेंक उखाड़।
मिलकर सब विद्रोह करो अब,भारत के फिर परचम गाड़।।

मत लेना भाग चुनावों में,कर का मत करना भुगतान।
सविनय अवज्ञा अस्त्र लिए,आजाद करो हिंदुस्तान।।

रावी नद्य गवाह बनी थी,इन्कलाब था जिंदाबाद।
और तिरंगा लहराया था,हिम्मत की सब देते दाद।।

छब्बीस जनवरी तीस रही थी,प्रथम स्वतंत्र दिवस आगाज।
लाखों लोग शपथ लेते थे,पाना है अब पूर्ण स्वराज।।

दांडी यात्रा (12 मार्च 1930)

साबरमती आश्रम से दांडी गाँव तक पैदल यात्रा

गाँधीजी को कैद में,बीते थे छः वर्ष।
भारतीय कॉंग्रेस का,आंदोलन उत्कर्ष।।
आंदोलन उत्कर्ष,जवाहर नीति बनाते।
रख कर मन में खोट,फिरंगी वो ठुकराते।।
जनमानस में क्षोभ,क्रोध की चलती आँधी।
दांडी का नेतृत्व,सँभाले फिर से गाँधी।।

नमक आंदोलन

नमक कानून के विरुद्ध सविनय कानून को भंग करना

परंपरा विश्वास नमक की,भारत भू की है पहचान।
स्वाद नमक का बढ़ जाता है,तड़का देता जब ईमान।।

कानून घृणित गोरों का था,वस्तु नमक पर था अधिकार।
उत्पादन पर रोक लगा कर,विक्रय कर की माँग अपार।।

उपयोग नमक का घर-घर में,बेच रहे थे ऊँचे दाम।
नष्ट करें वो शेष नमक को,पर वंचित था मानव आम।।

तोड़ नमक के कानूनों को,आदेशों का नम्र विरोध।
नींव अवज्ञा आंदोलन की,भारत लेता फिर प्रतिशोध।।

सूचित इर्विन को करके फिर,गाँधी चलते जब गंतव्य।
मुट्ठी भर नमक बनाया था,सिद्ध करें अपना मंतव्य।।

दांडी यात्रा

बारह तिथि मार्च महीना था,दांडी कूच करे पग लाख।
लक्ष्य विचार रहा आज़ादी,और बचाना अपनी साख।।

सागर तट को नाप रहे थे,नवसारी था अंत पड़ाव।
चौबीस दिवस पैदल चलते,पहुँचे थे सब दांडी गाँव।।

अंग्रेजों की लाठी खायी,और हजारों होते कैद।
संकल्प अडिग ले चलते थे,अपने कर्मों में मुस्तैद।।

भारत ने फिर करवट ली थी,हिलता था गोरा साम्राज्य।
सत्य अहिंसा पूछ रहे थे,गोरे कब छोड़ेंगे राज्य।।

कच्छ धरा से नमक उठाकर,स्पष्ट दिया था जब संदेश।
आंदोलन आकार बढ़ाता,अनगिन का था नित्य प्रवेश।।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (6 अप्रैल 1930)

नमक पर लगे कर का विरोध

नीति बनी पर न्याय नहीं,जब भारत ने यह बोध किया।
बाध्य नहीं फिर मानव था,वह भद्र रहा पर क्रोध किया।।
नोन बना हर गाँव कहे, हमनें सरकार विरोध किया ।
ध्येय लिए पग कोटि चले,बिन हिंसक हो प्रतिशोध किया।।

गोपालाचारी राज करें,तमिलनाडु का जब नेतृत्व।
बंगाल असम मिल साथ चले,भाव रखे थे सब एकत्व।।

कैद हुए जब गाँधी जी थे,सरोजिनी ने थाम कमान।
धरासना में लाठी खायी,कुछ लोगों ने खोए प्राण।।

नींव हिलाकर आंदोलन ने,दिया ब्रिटिश के सपने टाँग।
फिर इर्विन समझौता करते,मान रहे थे सारी माँग।।

गोलमेज सम्मेलन (12 नवंबर 1930)

*साइमन कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित हो जाने पर नये संविधान की रचना के लिए **लंदन में 'गोलमेज़ सम्मेलन'***

होता जब अहसास यह,नहीं टिकेगा राज।
नमक मुसीबत बन गया,छीने उनका ताज।।
छीने उनका ताज,बुलाते वह सम्मेलन।
गोलमेज का दौर,सुधारों का अवहेलन।।
अंग्रेजों को ज्ञात,नहीं भारत अब सोता।
होगा हिस्सेदार,यही अब संभव होता।।

संवैधानिक सुधारों पर चर्चा

वैचारिक मतभेद मिटाने,गोलमेज सम्मेलन तीन।
नेताओं से बैठक खाली,बैठ बजाते सारे बीन।।

धर्म विवाद बने जब ऐसे,कौन निकाले फिर परिणाम।
लंदन वार्ता फुस्स हुई थी,बनता कब है बिगड़ा काम।।

माँग स्वराज रहा था भारत,महासंघ का नेक विचार।
प्रतिनिधि उसमें सभी वर्ग के,जिनको मिलता सम
अधिकार।।

जाति विशेष लड़े आपस में,गांधी कहते नहीं अछूत।
उनका नेतृत्व विरोध करे,मतभेद रखे भारत के पूत।।

आजादी पर साधे चुप्पी,उपजा भारत में फिर रोष।
संधि हुई जो गांधी इरविन,ढूँढ़ रही थी सबके दोष।।

द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45)

'छोड़ो भारत देश' को,हुआ नया आगाज।
युद्ध दूसरा विश्व का,भोगे सकल समाज।।
भोगे सकल समाज,ब्रिटिश शासन भी लड़ता।
उनको मिलती हार,गले में फंदा पड़ता।।
कॉलोनी का अंत,ब्रिटिश शासन को तोड़ो।
आंदोलन का मूल,देश अब भारत छोड़ो।।

इस युद्ध में उपनिवेशवाद पर चोट
क्रिप्स मिशन :भारत से सहयोग लेना

विश्व युद्ध जो दूजा लड़ते,मिले ब्रिटिश को पहले हार।
राष्ट्र संघ संयुक्त बना जो,करता अपना वह अधिकार।।

कालोनी का अंत किया था,गोरों पर चौतरफा वार।
आजाद कहें अब दिल्ली चल,शास्त्री कहते उनको मार।।

मित्र देश गोरों से कहते,लो अब भारत का सहयोग।
क्रिप्स सुझाव लिए फिर चलते,दोनों हाथों लड्डू भोग।।

प्रस्ताव नकार दिया भारत,आंदोलन से हो टंकार।
अपनी रक्षा आप करेगें,छीनेंगे अपने अधिकार।।

संघर्ष भयानक जनता का,दमन युद्ध मिल खेलें खेल।
साथ अकाल सहे जनमानस,उससे राहत का कब मेल?

भारत छोड़ो आंदोलन (9 अगस्त 1942)

द्वितीय विश्व युद्ध के समय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की माँग
पहले स्वतंत्रता मिले फिर युद्ध में साथ देंगे

विषाद में पड़ा हुआ अचेत जो समाज था।
सचेत हो प्रयास से निहारता स्वराज था।।
भविष्य ये पुकारता कमान को सँभाल लो।
स्वतंत्र भावना प्रगाढ़ क्रांति की मशाल लो।।

क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद

रंगून पहुँचते जापानी,आशंका थी होगा युद्ध।
भारत हित में अलख जगाकर,गांधी कहते मत बन बुद्ध।।

वर्मा में अत्याचार बढ़ा,और ब्रिटेन बढ़ाता रार।
नहीं फैसला साफ बताता,और नहीं देता अधिकार।।

उन्नीस बयालिस वर्ष रहा,नौ अगस्त से हो आरंभ।
गाँधी का तीजा आंदोलन,अब तोड़े गोरों का दम्भ।।

काकोरी की वर्षगाँठ को,याद करें भारत के लोग।
एकत्र हुआ जनमानस था,यही दिवस था उत्तम योग।।

भारत छोड़ो का नारा दे,युसूफ मेहर लिए कमान।
गांधी राजेंद्र प्रसाद बने,जन आंदोलन की पहचान।।

भारत छोड़ो आंदोलन

अधिवेशन में लिया फैसला,करो-मरो की नीति विशेष।
कार्यालय पर हमला करते,और बदलता था परिवेश।।

कूद पड़े थे हिंदुस्तानी,छोड़ पढ़ाई जाते जेल।
एक स्वप्न आँखों में पाले,हो स्वतंत्रता से अब मेल।।

कांग्रेसी जब जेल गए थे,जिन्ना का फिर बढ़ा प्रभाव।
मुस्लिम लीगी पंजाब चले,और अधिक की उनको चाव।।

नीति दमन की अंग्रेजों की,रोक सकी थी कब उत्साह?
सड़कों पर निकले थे सारे,आजादी की उनको चाह।।

कांग्रेसी ध्वज चहुँ ओर लगा,कामकाज में कर व्यवधान।
हड़ताल करे सरकारी जन,नहीं चुकाते लोग लगान।।

तृतीय सर्ग

अखंड भारत का विभाजन

अगस्त क्रांति

विभाजन की नींव

द्वितीय विश्व युद्ध का प्रकोप चार ओर से।
प्रभाव ये तभी बढ़ा अगस्त क्रांति शोर से।।
भविष्य देखता हुआ ब्रिटेन बौखला गया।
कुयोग लीग का लिए सुराज को छला गया।।

पराधीनता के ताबूत में अंतिम कील

इतिहास गवाह बना फिर था,आए राम मनोहर साथ।
अरुणा आसफ ने पकड़ा फिर,जयप्रकाश नारायण हाथ।।

मिदनापुर और सतारा में,एक समानांतर सरकार।
सीधी टक्कर देते उनको,और दिखाएँ आँखें चार।।

अरूणा आसिफ उषा मेहता,करें रेडियो से संकेत।
सभी संगठित होते सुन कर,संदेशे दें सभी निकेत।।

प्रतिबंध लगा अखबारों पर,और मशीनगनों से वार।
आंदोलन को कुचल रहे थे,नित्य भीड़ पर अत्याचार।।

अब युद्ध छिड़ा था अपनों में,लीग चली गोरों के साथ।
नीति कठोर दमन की बढ़ती,वर्ग विशेष दिया जब हाथ।।

.

आजाद हिंद फौज (1943)

रासबिहारी बोस ने टोक्यो में भारत की स्वतंत्रता के लिए सभी युद्धबंदियों को एकजुट कर आजाद हिंद फौज का गठन किया

सेना को जापान में,करें रास तैयार।
सिंह निरंजन गिल सभी,मिलकर करें विचार।।
मिलकर करें विचार,गुलामी झेली कबसे।
करिए दिल्ली कूच,बोस यह कहते सबसे।।
नारा था जय हिंद,दमन का बदला लेना।
हिंद फौज आजाद,चंद्र की बनती सेना।।

आजाद हिंद फौज

दिल्ली चलो

सन तैंतालीस सिंगापुर में,बनती अस्थाई सरकार।
नेतृत्व सुभाष करें इसका,मांग राष्ट्रवादी अधिकार।।

अपना ध्वज मुद्रा डाक टिकट,जारी कर स्वाधीन प्रतीक।
गुप्तचरों की सेना भी थी,कार्य करे होकर निर्भीक।।

हिंद हमारा अमर रहेगा,सबके मन में यही जुनून।
दिल्ली सबको चलना है,आजादी के बदले खून।।

अनुयायी,नेता जी कहते,और मान्यता देते देश।
नामकरण द्वीपों का करके,बदलें भारत का परिवेश।।

सन चौवालिस में पग चूमे,अपनी धरती हिंदुस्तान।
पूरब-सीमा अरु वर्मा से,युद्ध लड़े थे बोस महान।।

आजाद हिंद फौज

कोहिमा युद्ध

सिंगापुर के मुख्यालय से,आजादी का चलता युद्ध।
गोरे कब छोड़ेंगे भारत,यही बोस को करता क्रुद्ध।।

तीन ब्रिगेड आजाद फौज को,साथ दिए था फिर जापान।
लहु के बदले आजादी से,रखना है भारत का मान।।

इम्फाल कोहिमा युद्ध रखे,एक अनोखा तथ्य विशेष।
दोनों ओर लड़े भारत ही,आपस में ही रख कर द्वेष।।

पासा पलटा विश्वयुद्ध का,नागासाकी बम विस्फोट।
हिरोशिमा भी झेल रहा था,खा परमाणु बमों की चोट।।

घुटने टेके जब जापानी,टोक्यो वापस जाते बोस।
असफलता में जीत चुकी थी,आजादी की दूरी कोस।।

नागासाकी और हिरोशिमा पर गिरे बम के प्रभाव से आंदोलन का पासा पलट गया

कर्नल ढिल्लो अरु सहगल पर,राजद्रोह का था आरोप।
शाहबाज भी झेल रहे थे,इनके सँग फाँसी का कोप।।

क्रोध किए जनमानस भड़का,अब आजाद फौज को छोड़।
थाम मशाल चले थे सारे,लाल किले को दो अब तोड़।।

हिंद फौज पर देख मुकदमा,और शिखर पर पहुँचे बोस।
नाम सुभाष रखें माता सब,अपने सुत को पालें पोस।।

मृत्यु सवाल उठाती अब तक,लोगों के मन में संदेह।
विश्वास नहीं था वर्षों तक,छोड़ सुभाष चले अब गेह।।

सफ़ल नहीं जो बोस हुए थे,रहा दूरगामी परिणाम।
नौसेना विद्रोह हुआ था,लिखता आजादी आयाम।।

जलसेना विद्रोह (1946)

रायल इण्डियन नेवी के सैनिकों द्वारा हड़ताल

जलसेना विद्रोह का,छुपा हुआ इतिहास।
सूत्रधार भी मौन हो,झेल रहे थे त्रास।।
झेल रहे थे त्रास,नहीं भोजन था मिलता।
सह नस्ली अपमान,अधर को अपने सिलता।।
करी भूख हड़ताल,सबक था उनको देना।
नभ सेना का साथ,लिए चलती जलसेना।।

नस्ली अपमान और खराब खाद्य पदार्थ के विरोध में प्रतिशोध

सन उन्नीस छियालीस था जब,नौसेना करती विद्रोह।
रॉयल नेवी ब्रिटिश इण्डियन,के नाविक फौलादी लोह।।

खाद्य खराब मिले सेना को,अंग्रेजों का अत्याचार।
और शिकायत जब करते थे,नस्ली अपमानित व्यवहार।।

अब भोज्य पदार्थ मिले उत्तम,वेतन भी हो एक समान।
हिन्द फौज की करो रिहाई,जलसेना की माँग महान।।

भूखे रह हड़ताल करी थी,खाना लेकर आती भीड़।
नौसेना को कब डर लगता,उन्हें बचाना भारत नीड़।।

नभसेना भी साथ चली थी,और चले सारे मजदूर।
बर्बर हमला गोरे करते,कितनों को मारे मगरूर।।

अखंड भारत का विभाजन

जनता की क्या राय थी,उसका किधर झुकाव।
नेक प्रयोजन हेतु फिर,होता नया चुनाव।।
होता नया चुनाव,एकता फिर थी हारी।
आरक्षित जो सीट,लीग को बहुमत भारी।।
ध्रुवीकरण सम्पूर्ण,धर्म का भेद पनपता।
अलग राष्ट्र का दंश,आज तक सहती जनता।।

विभाजन के कारण

संबंध बिगड़ते जाते थे,कांग्रेस और मुस्लिम बीच।
क्रिप्स मिशन मतभेद बढ़ा कर,नींव विभाजन रखता नीच।।

जिन्ना यह मतभेद बढ़ाते,नहीं सुरक्षित उनका धर्म।
भारत में हिंदू बहुसंख्यक,कब समझेंगे उनका मर्म।।

घोर विरोध करें कांग्रेसी,नहीं बँटेगा भारत देश।
हिंदू मुस्लिम साथ रहेंगे,एका का होगा परिवेश।।

कलकत्ता में दंगे भड़के,लीग करे फिर नरसंहार।
देते थे सीधी टक्कर वो,बेटी पर कर अत्याचार।।

अपने घर की आग बुझाने,ढूँढ़ रहे थे लोग निदान।
एक विकल्प विभाजन का दे,लोग बघारें अपना ज्ञान।।

दो धर्मों के मध्य बढ़ते मतभेद और साम्प्रदायिक दंगे

हिंद फौज के भारतवासी,अनगिन दुख सह लड़ते युद्ध।
भारतीय जो सैन्य ब्रिटिश के,देख रहे थे कर्म अशुद्ध।।

कौन किसे क्यों मार रहा था,आत्म ग्लानि का उपजा बोध।

विद्रोही बन लावा फूटा,ब्रिटिश मार्ग में फिर अवरोध।।

राजमुकुट लंदन में काँपा,उनको होता यह अनुमान।
खड़े पोत जो आग लगाते,निकल बचा लो अपने प्राण।।

घटनाक्रम पर गोरे सोचें, यही समय है छोड़ो देश।
अपने खर्चे पर सेना से,कौन मुड़ाएगा नित केश।।

सत्ता हस्तांतर करने का,चाल कुटिल फिर खेले खेल।
दो धर्मों में बाँट दिया था,भूगोल कराता कैसे मेल।।

मोउंटबैटन योजना

सैंतालिस के जून में,ब्रिटिश गवर्नर नीति।
देश व्यथित हो देखता,बँटवारे की रीति।।
बँटवारे की रीति,कलह अपनों में बढ़ती।
जाति धर्म ले भेद,द्वेष की सीढ़ी चढ़ती।।
टुकड़े करते देश,चोर सब मिलकर चालिस।
बँटवारा आधार,अमर होता सैंतालिस।।

भारत को भारत और पाकिस्तान में विभाजित किया जाएगा

ब्रिटिश गवर्नर माउंटबेटन,फिर आए थे भारत देश।
एक योजना प्रस्तुत करते, मिट जाएँगे सारे क्लेश।।

त्वरित नियम संसद में लाए,और रखें प्रस्ताव अनेक।
बँटवारे को समाधान कह,तोड़ रहे थे सपना एक।।

भारत के दो टुकड़े होंगे,नया बनेगा पाकिस्तान।
और विभाजन दो प्रांतों का,झेलेगा फिर हिंदुस्तान।।

पंजाब बाँट बंगाल बाँट,बाँट रहे थे मानव धर्म।
बँटवारा भी भोग रहा था,कुछ लोगों के कुत्सित कर्म।।

रियासतों को छूट मिलेगी,वो पकड़ें जिसका भी हाथ।
चाहे तो आजाद रहें वो,अपने बलबूते का साथ।।

विभाजन की प्रक्रिया

सत्ता हस्तांतरण

आयोग विभाजन का बनता,उसमें प्रतिनिधि थे कुल चार।
अपनी मनमानी करने का,गोरों को मिलता अधिकार।।

इसको स्वीकार किया सबने,अलग-अलग थे जिनके पक्ष।
आयोग गठित जो होता था,रेडक्लिफ बनते अध्यक्ष।।

साक्ष्य विभाजन का बनता था,सैंतालिस का मास अगस्त।
चौदह-पंद्रह तिथियों में फिर,एका के मंसूबे ध्वस्त।।

दो राष्ट्र स्वतंत्र बने उस दिन,पंद्रह की थी आधी रात।
भारतीय इक संघ बना था,मिली गुलामी को फिर मात।।

फूट डालकर राज करे थे,बांट दिया फ़िर देश अखंड।
रीति रिवाज विचार धर्म का,सबको मिलता फिर था दंड।।

रेडक्लिफ रेखा

एक विभाजन की रेखा ने,पक्केघर को तोड़ दिया।

वक्ष फुला मतभेद नाचता
धर्मों की आपाधापी
नचा कुदालें फिर खाई में
नींव नापता था पापी
पीर अभी तक क्रंदन करती,युग ने तथ्य मरोड़ दिया

आँगन की दीवारें सिसकें
टूटे जब अंक खिलौना
गेहूँ-बाली ढूँढ़ रही थी
माटी का वही बिछौना
खड़े खेत खलिहान पुकारें,क्यों मुझको अब छोड़ दिया।।

सीमाओं की कानाफूसी
मानचित्र अब तक सहता
रोकर कोरा पृष्ठ कराहे
भूगोल बदल दो!कहता
*हृद विदीर्ण कर रेखा पूछे,*वक्र मार्ग क्यों मोड़ दिया।।

रेडक्लिफ सीमा रेखा और बँटवारा

दो हिस्सों में पंजाब बँटा,बहुमत आबादी आधार।।
मुस्लिम हिंदू सिक्ख क्षेत्र में,सीमा की खींचे दीवार।।

अल्प समय इनको मिलता था,ज्ञान नहीं रखता आयोग।
समय नहीं सर्वेक्षण का था,कैसा आया था संजोग।।

बंग प्रांत का पूर्वी हिस्सा,बनता पूर्वी पाकिस्तान।
बांग्लादेश अभी कहलाता,यही हुआ है नव आख्यान।।

पंजाब विभाजन से बनता,अधुना युग का पाकिस्तान।
बँटवारा का आधार रहा,मिले सभी को एक समान।।

मानचित्र पर रेखा खींची,बांट दिया फिर भारत देश।
एक हवाई सर्वेक्षण कर,बना रहे थे नव परिवेश।।

बँटवारा

भूल भयानक कर बैठे थे,नहीं लिया सीमा संज्ञान।
एक कक्ष था एक देश में,दूजे में था शेष मकान।।

सीमा निर्धारण पहले से था,फिर क्यों रखते इसको गुप्त।
घोषित दो दिन बाद किया था,साक्ष्य सभी करते फिर
लुप्त।।

कुछ क्षेत्र विवादित जो बाँटे,समझ न आया उनका सार।
मनमानी नासमझी ने फिर,करा विभाजन बंटाधार।।

जनता को कुछ स्पष्ट नहीं था,सपने टूटे रातों-रात।
कहाँ रहे या कहाँ छोड़ दे,झेल रहे थे सब आघात।।

उप-महाद्वीप का बँटवारा,बँटते जाते नदिया गाँव।
दर्द लिए चलती आजादी,ढूँढ़ रही थी फिर से ठाँव।।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम (1947)

इस समय भारत के अंतर्गत तीन तरह के क्षेत्र थे

बँटवारा जब था हुआ, रहे क्षेत्र तब तीन।
ब्रिटिश नियंत्रण में रहे,तब कुछ राज्य अधीन।।
तब कुछ राज्य आधीन, अलग फिर बर्मा होता।
चला अलग सीलोन, क्षेत्रफल फिर था रोता।।
पुर्तगाल अरु फ्रांस, रखें कुछ क्षेत्र हमारा।
रजवाड़ों का काल, देखता था बँटवारा।।

विभाजन की रेखा

अखंडता भारत की रोई,देखे जब अपनों की पीर।
नहीं चाहते थे बँटवारा,पर निकला कमान से तीर।।

तीन तरह के क्षेत्र रहे तब,थे उसमें कुछ देसी राज्य।
कुछ जनरल के आधीन रहे,कुछ पर पुर्तगाल साम्राज्य।।

बर्मा भी तब अलग हुआ था,और अलग होता सीलोन।
क्षेत्र अखंड रहा था जो,झेले घावों पर फिर नोन।।

रियासतें भी लगभग छः सौ,अंग्रेजों के जो आधीन।
भारत में कुछ विलय करें थी,कुछ समझें अपनी तौहीन।।

पाँच क्षेत्र तब ऐसे सोचें,राज्य रहे उनका आजाद।
पर भौगोलिक पृष्ठभूमि में,कब तक रहते वह आबाद।।

विभाजन का दर्द

बँटवारे में भाव बँटे थे,बार-बार रोया था धर्म।
मानवता भी शर्मसार थी,देखे जब दानव से कर्म।।

एक राष्ट्र का सपना देखा,उस पर हुआ कुठाराघात।
रक्त बहा था अपनों का ही,आया था फिर झंझावात।।

वर्षों का संघर्ष रहा था,देश हुआ था तब आजाद।
और विभाजन बनी त्रासदी,कितने घर होते बर्बाद।।

महिलाएँ बच्चे बूढ़े सब,विस्थापन का झेले दंश।
नारी के तन से गुजरा था,सीमा रेखा का वह अंश।।

लाखों लोग हुए बेघर थे,उनका कौन करे भुगतान।
रेडक्लिफ रेखा बँटवारा,कहाँ सफल था ये अभियान।।

संपत्ति का बँटवारा

धन दौलत के बंटवारे में,उपजे थे गहरे मतभेद।
भारत पर नित्य दबाव पड़े,जिसका अब भी मन में खेद।।

युद्ध हुआ था दो देशों में,क्या यह था आजादी लक्ष्य।
लाखों जन भागे इधर-उधर,अपनों के ही बनते भक्ष्य।।

सरकार उपाय नहीं जाने,रोक सके हिंसा अपराध।
नरसंहार हुआ लाखों में,यात्रा कब थी फिर निर्बाध।।

हिंदू सिख को बाहर फेंका,ऐसा करता पाकिस्तान।
पर भारत के मुस्लिम जन को,नेता देते हिंदुस्तान।।

दो दिन देख तिरंगे को फिर,लौट चले थे पाकिस्तान।
कहाँ छोड़ना चाहा सबने,अपना प्यारा हिंदुस्तान।।

गाड़ी पैदल हर साधन से,चलती थी तब भीड़ अपार।
भूखे नंगे भटके चलते,सह कर कितने अत्याचार।।

मारकाट हिंसा मचती थी,लुप्त हुआ था कहाँ विवेक।
लहु के छींटे नींव सींचते,कहाँ भविष्य रहेगा नेक।।

आज कलम भी रो पड़ती है,लिखे विभाजन का जब दर्द।
ऐसी आजादी कब सोची,सपनों में लिपटी थी गर्द।।

भारत का राजनीतिक एकीकरण

आज़ादी के बाद का भारत

आजादी का सूर्य उदय था,नवजीवन का कर संचार।
चिर निद्रा से जाग रहा था,पाने को अपना अधिकार।।

शैशव खेल रहा जब आँगन,तब आए थे कष्ट अपार।
जटिल समस्या मुँह खोले थी,रियासतों का था अंबार।।

छः सौ रियासतें थीं लगभग,कैसे होगा मेल मिलाप।
वल्लभभाई वीपी मैनन,देख रहे थे क्रियाकलाप।।

जूनागढ़ भोपाल रहे जो,चाहे थे अपना साम्राज्य।
हैदराबाद भी अलग रहे,सोचे अपना होगा राज्य।।

कुछ रजवाड़े विद्रोह करें,और करें भारत को तंग।
शेष विलय करते भारत से,और बने थे इसका अंग।।

राजनीतिक एकीकरण

कश्मीर में युद्ध हुआ जो,महाराज ने सोच विचार।
भारत से विलय करेंगे वह,हरीसिंह करते स्वीकार।।

अड़तालिस में फिर होता था,सारी रियासतों का अंत।
पर भोपाल कहाँ माना था,देख रहा था दृश्य अनंत।।

एक जून उन्चास रहा जब,मेनन का था सफल प्रयास।
चढ़ा लाल कोठी पर झंडा,लोकतंत्र फिर लेता श्वास।।

अध्याय नया फिर लिखा गया,अब अपना था भारत देश।
आजाद हवा में साँसे लेता,आजादी का नव परिवेश।।

सूत्रधार जो एका के थे,शत-शत उनको करें प्रणाम।
नव भारत के निर्माता वह, उनसे ही यह पावन धाम।।

पूर्ण गणतंत्र (26 जनवरी 1950)

वर्ष उनीस पचास रहा था,गाता भारत गौरव गान।
छब्बीस जनवरी तिथि शुभ थी,पाया अपना पूर्ण विधान।।

संविधान की भाषा लेकर,दिवस कराता हमको गर्व।
भारत की उन्नत गाथा में,गणतंत्र लिए आया पर्व।।

प्रजातंत्र में जनमानस को,अनगिन मिलते हैं अधिकार।
जन गण मन का गायन है यह,भारत माता का आधार।।

निष्ठापूर्ण व्यवहार करें सब,नहीं रखें नीयत में खोट।
सोने की चिड़िया फिर होंगे,नहीं सहेंगे कोई चोट।।

अपने हित को जब साधेंगे,सदा देश के ही उपरांत।
भारत उन्नत भाल रहेगा,और अडिग होगा दृष्टांत।।

गोवा मुक्ति आंदोलन

आज़ादी के बाद भी,पुर्तगाल का राज्य।
गोवा क्यों आधीन हो,हो अपना साम्राज्य।।
हो अपना साम्राज्य,पुर्त को दूर भगाना।
दमन दीव अधिकार,देश चाहे था पाना।।
चला विजय अभियान,रहे सुख से आबादी।
स्वप्न हुआ फिर पूर्ण,मिली पूरी आजादी।।

गोवा मुक्ति

ब्रिटिश फ्रांस के खत्म हुए थे,जब सारे ही औपनिवेश।
पुर्तगाल क्यों डेरा डाले,पूर्ण स्वतंत्र रहे यह देश।।

सागर तट की सुंदर नगरी,पर वर्षों से कारावास।
शोषण दोहन करें विदेशी,रही झेलती कितने त्रास।।

अंग्रेजों से मुक्ति मिली पर,पुर्तगालियों का अधिकार।
मार कुंडली बैठे थे वह,गोवा पर करते तकरार।।

लोगों ने संघर्ष किया था,सही यातना थी भरपूर।
कितने आंदोलन करे गए,पर लक्ष्य रहा था कोसों दूर।।

नहीं शांति से देश छोड़ते,नहीं संघ की मानें बात।
राम मनोहर मधु लिमए जी,दिए उन्हें कितने आघात।।

ऑपरेशन विजय (19 दिसम्बर 1961)

कूटनीति जब विफल रही थी,निर्णय लिए जवाहर एक।
सैन्य शक्ति से प्राप्त करेंगे,चाहे सह लें कष्ट अनेक।।

अभियान विजय फिर किया गया,ले सीना के तीनों अंग।
लगभग दो दिन युद्ध चला था,गोवा फिर भारत के संग।।

वर्ष उन्नीस सौ इकसठ का,मास दिसंबर आया खास।
शुभ तिथि भी उन्नीस रही वह,आजादी का ले उल्लास।।

पुर्तगाल ने दावा छोड़ा,तोड़ा भारत से संबंध।
आजाद हवा में सांसे थीं,आजादी की लिए सुगंध।।

दमन-दीव भी आज़ाद हुआ,चौदह वर्षों तक वनवास।
पूर्ण राज्य गोवा को मिलता,सफल हुआ था नेक प्रयास।।

श्वेत शांति अरु केसरी,रूप लिये बलिदान।
रंग हरा संपन्नता, भारत माँ पहचान ।।
लिये तिरंगा हाथ में,करते जय-जयकार,
मातृभूमि अभिमान है,अमर तिरंगा शान ।।

आज का भारत

संघर्षों का इतिहास रहा,बड़ा कठिन बीता था काल।
बलिदानी गाथा से पाया,भारत माँ ने उन्नत भाल।।

सात दशक जो बीत चुके हैं,उसमें अब अठ्ठाइस राज्य।
केंद्र अधीन प्रदेश आठ हैं,यह नवभारत का साम्राज्य।।

जटिल समस्याएँ सुलझा कर,सभी क्षेत्र में हुआ विकास।
विश्व गुरू अब भारत होगा,ऐसा हमको है विश्वास।।

वर्ष पचहत्तर होने को अब,हमको भारत भू पर गर्व।
याद दिलाता अमृत महोत्सव,आजादी से आया पर्व।।

तीन रंग से भाल सजाकर,लाल किले की बढ़ती शान।
शस्य श्यामला धरती अपनी,गाती भारत संस्कृति गान।।

जयहिंद

चतुर्थ सर्ग

अखंड भारत के स्वप्नदृष्टा

राष्ट्र का निर्माण कर्त्ता,चल पड़ा था शौर्य गाकर।
यज्ञ की वेदी जली थी,भूमि रज माथे लगाकर।।

भाव जागे देशहित के,प्राण फूँके पीढ़ियों ने,
वीरता को शत नमन है,भाव श्रद्धा के चढ़ाकर।।

राजा राममोहन राय

(22 मई 1772 - 27 सितंबर 1833)

दुर्गुणों को देखा, राय के अंतस में पीर।
ब्रह्म दल स्थापित कर,तोड़ते थे वह जंजीर।।

अधुना भारत के जनक रहे,पुनर्जागरण का लें स्वप्न।
धर्म कुरीति मिटे मानव में,राजा मोहन करते यत्न।।
रोजगार गोरों का छोड़ा,स्वतंत्रता का जागा भाव।
दो मोर्चे पर साथ लड़े थे,पाखंडों से ले टकराव।।
बाल विवाह प्रथा पर्दा की,राजा करते घोर विरोध।
सती प्रथा का अंत करें जब,महिलाओं का जागा बोध।।
संवाद कौमुदी से करके,स्थापित करते ब्रह्म समाज।
परंपरा के संवाहक बन,राष्ट्र प्रणेता दें आवाज।।
आडंबर पर चोट करें जो,राजा मोहन बने मिसाल।
दूरदर्शिता कर्मठता से,उन्नत भारत माँ का भाल।।

बेगम हजरत महल

(1820 - 7 अप्रैल 1879)

क्रांतिकारी हजरत,से अवध की बढ़ती शान।
युद्ध गोरों से कर,वीरता गाती गुणगान।।

मोहम्मदी खातून रहा था,हजरत के बचपन का नाम।
पेशे से वह गणिका थीं पर,लड़तीं आजादी संग्राम।।

शाह हरम की महक परी ने,पाया पुत्र रत्न उपहार।
हजरत महल उपाधि मिली थी,बिरजिस से रौनक संसार।।
वाजिद को गोरे कैद करें,और अवध पर जब अधिकार।
बिरजिस को गद्दी पर बैठा,हजरत भरतीं थी हुंकार।।
गोरों की नीति कुटिल समझें,और समझती उनकी चाल।
वीर साहसी पर्याय बनी,छुपकर पहुँची थीं नेपाल।।
लखनऊ छिना था जब उनसे, करतीं गाँवो से नेतृत्व।
गणिका से बेगम सेनानी, अमर रहा उनका व्यक्तित्व।।

दादाभाई नौरोजी

(4 सितंबर, 1825-30 जून 1917)

पारसी नौरोजी,को पितामह का सम्मान।
थे ब्रिटिश संसद में ,लक्ष्य आजादी
अभियान।।

दादाभाई नौरोजी का,ऐसा था व्यक्तित्व महान।
प्रथम व्यक्ति भारत के जिनका,बढ़ा ब्रिटिश संसद में मान।।
रहें गणित के शिक्षक दादा,या कपास का हो व्यापार।
लक्ष्य प्रथम सांसद बन रखते,जनता का हो नित्य सुधार।।
लंदन इंडियन सोसाइटी,से रखते भारत का पक्ष।
उपनिवेश द्वारा शोषण का,ग्रंथ लिखे नौरोजी दक्ष।।
प्रगतिशील सिद्धांत रखे वह,समानता में रख विश्वास।
राष्ट्र कांग्रेस की नींव रखी,लेकर आजादी की आस।।
राजनीति के राष्ट्रपितामह,मातृभूमि की प्रिय संतान।
योगदान यही हमारा हो,पूर्ण करें उनके अभियान।।

.

मंगल पांडे

(19 जुलाई 1827-8 अप्रैल 1857)

वीर मंगल पांडे,का प्रथम विद्रोही नाद।
जो लगी चिंगारी,क्रांति का बढ़ता उन्माद।।

बलिया के बागी मंगल को,याद रखेगा हिंदुस्तान।
चिंगारी जो सुलगाई थी,आजादी का ले अभियान।।
कारतूस में चर्बी देखी,आगे आया था फिर धर्म।
संग लिए तब सेना पूरी,समझाते थे उनको कर्म।।
एक सिपाही इन्फेंट्री का,कब रखता प्राणों से मोह।
मुख से चर्बी नहीं काटना,करता सेना से विद्रोह।।
दूध पिया जिसका बचपन में,उसका क्यों सहना अपमान।
हाथ नहीं आए गोरों के,न्यौछावर फिर करते प्राण।।
अप्रैल आठ की फाँसी में,मंगल घर-घर लेते जन्म।
हर पन्ने पर अमर हुए वह,कुर्बानी को कहते धर्म।।

रानी लक्ष्मीबाई

(19 **नवंबर** 1828 - 18**जून** 1858)

वीरता लक्ष्मी की,गान करती नूतन सर्ग।
शौर्य की गाथा में,है अमर झांसी का अर्ग।।

देश कहाँ भूला करता है,शौर्य समर्पण या वरदान।
गर्वित होती धरती सुनकर,लक्ष्मीबाई नाम महान।।
दत्तक पुत्र रहे दामोदर,अल्प आयु में पति का शोक।
अंग्रेजों को स्वीकार नहीं,गोद नीति में लगती रोक।।
झांसी पर जब अधिकार हुआ,तब रानी ने किया विरोध।
क्रांति बीज लक्ष्मी ने बोया,मन में ठाना था प्रतिशोध।।
तोपें आग उगलती उनकी,युद्ध कला में थीं वो दक्ष।
दामोदर को लिए पीठ पर,रणचंडी फिर नापे अक्ष।।
आत्मसमर्पण नहीं किया था,देख वीरता गोरे दंग।
ऐसे सेनानी अमर हुए,अंत काल जो लड़ते जंग।।

झलकारी बाई

(22 **नवंबर** 1830 -1857)

वीर झलकारी ने,मातृ भू पर कर बलिदान।
ऋण चुका लक्ष्मी का,पा गईं गौरव सम्मान।।

बुंदेलखंड की मर्दानी,झलकारी था जिसका नाम।
रणचंडी का रूप धरे वो,लड़तीं आजादी संग्राम।।
साहस निष्ठा और वीरता,से पाया सेना में काम।
दुर्गा दल की सेनापति ने,किया ब्रिटिश का काम तमाम।।
भितरघात झांसी में होता,जयचंद्र बना दूल्हे राव।
झलकारी को पति शोक हुआ,पर निष्ठा का रखतीं भाव।।
ह्यूग रोज से मिलने पहुँची,और उन्हें दी थी ललकार।
फांसी की माँग करी थीं वह,लिए भवानी का अवतार।।
मातृभूमि का कर्ज चुकाया,नाम वफादारी पर्याय।
रानी लक्ष्मी बनकर लडतीं,कर्तव्यों से करतीं न्याय।।

अवंती बाई लोधी

(16 **अगस्त** 1831 - 20 **मार्च** 1858)

जीवनी निष्ठा की,वीरता का रच पर्याय।
फिर अवंती बाई,ने लिखा नूतन अध्याय।।

वीर अवंतीबाई लोधी,भारत की ऐसी फौलाद।
प्रथम शहीद वीरांगना वह,देश प्रेम जीवन उन्माद।।
लोक काव्य की बनी नायिका,बचपन से सीखे तलवार।
शौर्य घुड़सवारी के किस्से,करते इनका नित्य प्रचार।।
हड़प नीति अंग्रेजों की थी,राज्य रामगढ़ पर थी दृष्टि।
बनी अवंतीबाई रानी, छीने उनसे अपनी सृष्टि।।
एक पत्र सँग काली चूड़ी, भेज रही थी चारों ओर।
क्रांति समर्थन सबसे माँगे,चाहें एका की नव डोर।।
घुघरी बिछिया रामनगर पर,हिला गईं गोरों की चूल।
नहीं किया था आत्मसमर्पण,देश भक्ति का समझें मूल।।

सुरेंद्रनाथ बनर्जी

(10 **नवंबर** 1848-6 **अगस्त** 1925)

बंग बँटवारे का,लिख दिया विद्रोही सार।
नेशनल इन मेकिंग,के बनर्जी रचनाकार।।

राष्ट्रवाद के सूत्रधार को,बंग विभाजन देता कष्ट।
एका का सिद्धांत हृदय में,देश प्रेम ही रहा अभीष्ट।
नस्लभेद क्यों देश सहे अब,फूँको अब आजादी नाद।
मतभेद भुला दो अपने सब,प्राप्त करें भारत बुनियाद।।
इंडियन नेशनल लिबरेशन,नाथ सुरेंद्र रखते नींव।
उनको कहते इंडियन बर्क,करें कार्य जैसे गांडीव।।
बंगाली का संपादन कर,करते गोरों को मजबूर।
वस्तु विदेशी नहीं खरीदो,नहीं बनो इनके मजदूर।।
कहते!आजादी की देवी,माँगें भक्तों से बलिदान।
नाथ लिए वाणी का कौशल,करते 'मेकिंग' का गुणगान।।

स्वामी श्रद्धानंद

(22 फरवरी 1856-23 दिसंबर 1926)

आत्मज्ञानी मुंशी,संत जैसे होते चंद।
देश की निष्ठा में, प्राण देते श्रद्धानंद।

शिक्षाविद सेनानी सन्यासी, राष्ट्रभक्त थे एक महान।
दयानंद से दीक्षा लेकर, गाते वैदिक संस्कृति गान।।
मुंशी राम नाम का बालक, नहीं मानता ईश्वर सत्य।
दयानंद के तर्कों से फिर, समझे मुंशी एक अनित्य।।
देश समाज स्वसंस्कृति शिक्षा, का करते थे आर्य प्रचार।
देशभक्त छात्रों का गुरुकुल, क्रांतिनीति का करे प्रसार।।
कांग्रेस तुष्ट इस्लाम करे, स्वामी समझें घातक नीति।
मतांतरण से व्यथित हुए थे, शुद्धिकरण अपनाते रीति।।
अब्दुल ने स्वामी को मारा,एक सोच का होता अंत।
सर्व धर्म का सपना टूटा, देश भोगता कष्ट अनंत।।

बाल गंगाधर तिलक

(23 **जुलाई**1856 - 1 **अगस्त** 1920)

लोक प्रचलित नारा,मुक्ति जन्मों का अधिकार।
बाल गंगाधर जी,लिख गए गीता का सार।।

तेईस जुलाई धन्य रही,गाती गंगाधर गुणगान।
महाराष्ट्र के रत्नागिरी में,करने आए जब उत्थान।।
जन्म सिद्ध अधिकार रहा जो,उससे वंचित रहा समाज।
लोकमान्य उपनाम मिला जो,चाह रहे थे बाल सुराज।।
दक्कन शिक्षा समिति बनी थी,अंग्रेजी का घोर विरोध।
देवनागरी मान्य रहे अब,यही कराते सबको बोध।।
जगा रहे थे जनमानस को,दिए क्रांति का नव संदेश।
सार लिखे फिर गीता का वह,नित्य सुधार रहे परिवेश।।
पत्र केसरी आवाज बना,देश स्वतंत्र चला अभियान।
भारत के संरक्षक निर्माता,उनके अद्भुत कार्य महान।।

विपिन चंद्र पाल

(7 **नवंबर** 1858 -20 **मई** 1932)

जब कलम लिखती थी,चंद्र के चिंतन का तेज।
पाल की तिकड़ी से,काँप जाते थे अंग्रेज।।

सात नवंबर को जन्मे थे,वक्ता लेखक भारत भक्त।
ब्रह्म समाज प्रभावित करता,रूढ़िवादिता करे विरक्त।।
कुरीतियों का त्याग करें वह,विधवा से जब किए विवाह।
जाति धर्म का भेद मिटाकर,उन्नत संस्कृति बनी गवाह।।
बंग विभाजन की पीड़ा में,क्रांति जनक तब बनते पाल।
अलख स्वराज जगह करके वह,अंग्रेजों की खींचें खाल।।
घोर विरोधी नरम दलों के,विपिन चंद्र के तर्क अकाट्य।
वस्तु विदेशी की होली में,चाह रहे थे प्रांत अभाज्य।।
श्रमिकों का हित रहे सुरक्षित,प्रेयर पिटिशन से कब कार्य।
नहीं उसूलों से समझौता,आदर्शों के वह पर्याय।।

भीकाजी कामा

(24 सितंबर 1861-13 अगस्त 1936)

देश की परिपाटी,ध्वज तले रहता अभिमान।
थी विदेशी धरती,वह खड़ी थी सीना तान।।

देशभक्त बेटी भारत की,भीकाजी था जिसका नाम।
भूमि विदेशी पर भारत ध्वज,देख रहा था जग अभिराम।।
सुख सुविधा के जीवन में था,कामा उर संवेदनशील।
दंश गुलामी का जब देखें,नैनो से बहती थी झील।।
सामाजिक पिछड़ापन कहता,नारी को ही जब अभिशाप।
भीका जी तब अलख जगाकर,चली मिटाने थीं संताप।।
कामा जी का झंडा ऊँचा,वंदे मातरम का था गान।
सूरज चंदा लिए तिरंगा,हिंदू मुस्लिम की पहचान।।
राष्ट्रीय पुजारिन चाहे थी,हो साम्राज्यवाद का अंत।
देश कलंक मिटाने को फिर,लगी रहीं जीवन पर्यंत।।

मदन मोहन मालवीय

(25 **दिसंबर** 1861 - 12 **नवंबर** 1946)

युग प्रणेता मोहन,थे महामानव अवतार।
फंद से रक्षा की,ये वकालत की थी धार।।

पच्चीस दिसंबर याद रहे,देवदूत जन्मा था एक।
लोक हितैषी योगी शिक्षक,कार्य किए थे जिसने नेक।।
संस्कृत के विद्वान रहे थे,और वकालत से पहचान।
लक्ष्य समाज सुधार रखे जब,कर्मवीर का कार्य महान।।
राष्ट्र निर्माण के सपने में,शिक्षा को दें सदा महत्व।
काशी का हिंदू विद्यालय,दिया युवाओं को दायित्व।।
चोरी चोरा केस लड़ा जब,जीत गए कितने अभियुक्त।
दो दल में फिर साध संतुलन,प्रण लेते अब होना मुक्त।।
तम को दूर भगाकर मोहन,दें अनुपम आलोकित ज्ञान।
सत्यमेव नारा देकर के,किया धर्म संस्कृति उत्थान।।

लाला लाजपत राय

(28 **जनवरी**1865- 17 **नवंबर** 1928)

लाजपत लाला,साइमन का कर विद्रोह।
केसरी पंजाबी,कब रखें प्राणों से मोह।।

सही अर्थ में क्रांतिवीर थे,भिक्षुक रूप नहीं स्वीकार।
रास न आई कांग्रेस नरम,प्रेरित करते आर्य विचार।।
अलख जगाकर छात्रों में,कृषकों का करते नेतृत्व।
गरम दलों के नेता यह,क्रांति युद्ध का लें दायित्व।।
भूकंप पीड़ितों की पीड़ा,जब सहती थी भूख अकाल।
लाला ने राहत कार्य किया,और लिया बच्चों को पाल।।
बाल पाल से हाथ मिला कर,करें स्वदेशी पर अधिकार।
साइमन गो बैक कहे जब,छाती सहती लाठी वार।।
मौत कहाँ वीरों को रोके,जन्मे थे फिर कितने राय।
व्यर्थ नहीं बलिदान गया था,आजादी से मिलता न्याय।।

गोपाल कृष्ण गोखले

(9 मई 1866 -19 फरवरी 1915)

सत्य ही सर्वोपरि,गोखले का था सिद्धांत।
गुरु रहे गाँधी के,लोकसेवक थे संभ्रांत।।

रत्नागिरी भी धन्य हुई थी,कितने युग करते हैं गर्व।
राजनीति के गुरू गोखले,जन्म हुआ आज़ादी पर्व।।
हिंदू मुस्लिम की एका में,धर्मभेद का करें विरोध।
थी देशभक्ति आध्यात्मिक जो,नरम विचारों का था बोध।।
सर्वेंट्स संस्था के संस्थापक,गोपाल करें यत्न अनेक।
दे युवकों को संस्कृति शिक्षा,देश प्रेम भरते अतिरेक।।
गोरों की अर्थव्यवस्था में,गलत आंकड़ों का था खेल।
उनके भाषण जागृत करते,और कराते भारत मेल।।
कट्टरपंथी घोर विरोधी,युवकों के थे प्रेरक स्रोत।
कृष्ण जगाते नयी चेतना,स्वतंत्रता का भर उद्योत।।

मोहनदास करमचंद गाँधी

(2 अक्टूबर 1869 -30 जनवरी 1948)

सत्य का अनुशीलन,ही रहा हो जिसका ध्येय।
जीवनी गांधी की,नित बने सबका पाथेय।।

भेदभाव गोरों का सहकर,अंतर्मन में था अवसाद।
सत्य अहिंसा पथ पर चलकर,देश कराया था आजाद।।
एक महात्मा लेकर लाठी,घूम रहा था चारों ओर।
करमचंद गांधी का सपना,आजादी की अब हो भोर।।
राष्ट्रपिता बापू कहते थे,खादी मानें एक विचार।
भाव स्वदेश जगा कर कहते,असहयोग ही है हथियार।।
चरखे का ताना-बाना था, वस्त्र विदेशी का कर त्याग।
नमक बना संदेश दिए थे,आंदोलन के गाते राग।।
ब्रह्मचर्य के पालन में था,रघुपति राघव राजा राम।
शुद्धिकरण के मूल मंत्र से,पावन करते भारत धाम।।

मातंगिनी हाजरा

(19 अक्टूबर 1870 -29सितंबर 1942)

शंख से स्वागत कर,हाजरा गांधी के साथ।
थीं खड़ीं ध्वज थामें,गोलियाँ सहती वह माथ।।

बंगाली वीरांगना रहीं,मातंगिनी हाजरा नाम।
आंदोलन में जब कूदीं थीं,साहस करता उन्हें प्रणाम।।
साठ वर्ष के धनी वृद्ध से,अल्प आयु में हुआ विवाह।
मात्र अठारह उम्र रही थी,मिला वैधव्य कष्ट अथाह।।
गांधी बूढ़ी कहते सब थे,आंदोलन की थाम मशाल।
शौर्य साहसी महिला का फिर,लहू लिए था नित्य उबाल।।
गांधी का सिद्धांत लिए वह,नमक बना करतीं विद्रोह। काले
झंडे लिए खड़ी जब,कब रखती जीवन से मोह।।
गोली माथे पर खायी थी,नहीं झुकाया ध्वज का मान।
वंदे मातरम कहते-कहते,करतीं प्राणों का बलिदान।

देशबंधु चितरंजन दास

(5 नवंबर 1870 - 16 जून 1925)

दास चितरंजन जी,देशभर के प्यारे बंधु।
पक्ष वक्ता ज्ञानी,तर्क से भरते थे सिंधु।।

सत्य ईमान भरा था जिसमें,जिसके जीवन में ऐश्वर्य।
ऐसे चितरंजन दास रहे,राष्ट्रभक्ति का रख सौंदर्य।।
दास वकालत सफल हुई थी,जब वह रखते अपना पक्ष।
सरकार ब्रिटिश की हारी थी,घोष केस में बनते दक्ष।।
अपना सारा वैभव त्यागे,आजादी की खींचे रेख।
धनी कलम के चितरंजन थे,असहयोग का लिखते लेख।।
सागर संगीत लिखे वह थे,नारायण था मासिक पत्र।
सारी संपत्ति दान करें वह,त्याग मिसाल कहाँ अन्यत्र।।
अनगिन संस्था में आज अमर,नतमस्तक हो करते याद।
शत बार प्रणाम करें तुमको,अपना भारत जो आबाद।।

वी ओ चिदंबरम पिल्लई

(5 सितंबर 1872 - 18 नवंबर 1936)

दूरदर्शी पिल्लै,आत्मनिर्भरता के पर्याय।
पोत हो अब अपना,स्वप्न था देशी अध्याय।।

पाँच सितंबर को जन्मे थे,तमिलनाडु पिल्लई महान।
वी ओ सब उन्हें पुकारे,जलपोत स्वयं का था अभियान।।
ब्रिटिश दासता से लड़ते वो,बनकर के कोल्हू का बैल।
चिदंबरम का अर्थ पूर्ण कर,नाश करें भारत का मैल।।
जलयान खरीदेंगे अपना, ऐसा लेते मन में ठान।
सत्य सिद्ध करते फिर प्रण को,तोड़े गोरों का अभिमान।।
श्रमिकों की आवाज बने जब,कोरल मिल में कर हड़ताल।
ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों से,वह चलते थे अपनीचाल।।
शिष्य बने जब गंगाधर के,आजादी के नायक वीर।

कर्णधार की लिए उपाधि,बने रहे भारत प्राचीर।।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

(31 अक्टूबर 1875 - 15 दिसम्बर 1950)

जब बँटा भारत था,त्रासदी आयी अति घोर।
लौह वल्लभ ने फिर,एकता की बाँधी डोर।।

दूरदर्शिता सरिस शिवाजी,कूटनीति थी सम कौटिल्य।
सजग सचेत सदा जीवन में ,नीति निपुणता थी प्राबल्य।।
बने बारडोली के नायक,महिलाएँ कहती सरदार।
लौह पुरुष थे उच्च श्रृंग पर,लिए अखंडित देश प्रभार।।
क्रांति करी थी रक्तहीन जो,लोकतंत्र का दे आधार।
ऐसे नायक बिरले होते,जो जीवन को दें आकार।।
मूर्ति खड़ी जो एका की है,हर उर में अब धड़कें आप।
उन्हीं सिद्धांत पर आज चलें,कटे देश के सब संताप।।
नाप सकेगा कौन ऊँचाई,ऐसा बल्लभ भाई नाम।
भारत रत्न महान रहा जो,नतमस्तक हो उन्हें प्रणाम।।

बिरसा मुंडा

(15 नवंबर 1875 - 9 जून 1900)

आदिवासी मुंडा,क्रांति का करते आगाज।
आस वनरक्षक की,अंत हो रानी का राज।।

एक आदिवासी नायक ने,आजादी की थाम मशाल।
क्रांतिवीर बिरसा मुंडा ने,उलगुलान से किया कमाल।।
धरती आबा नाम मिला है,देव समझकर पूजें आज।
कलम धन्य है लिखकर गाथा,लाभान्वित है पूर्ण समाज।।
शौर्य वीर योद्धा थे मुंडा,जल जंगल के पहरेदार।
उलगुलान में जीवित अब भी,माँग रहे अपने अधिकार।।
सबके हित की लड़ी लड़ाई,नहीं दिया था भूमि लगान।
एक समाज सुधारक बन के,कार्य किए थे कई महान।।
विष देकर गोरों ने मारा,छीन सके क्या क्रांति विचार।
परिवर्तन की आँधी लेकर,जन्मों फिर से हर घर-द्वार।।

सरोजनी नायडू

(13 फरवरी 1879 - 2 मार्च 1949)

फरवरी तेरह तिथि,राष्ट्र महिला के नाम।
कोकिला भारत की,मौत को देतीं पैगाम।।

जन्म सरोजनि का भारत में,उन्नत भाल करे नित गर्व।
आज नमन उनको हम करते,जिनसे है आजादी पर्व।।
बुद्धि कुशाग्र रही उनकी थी,काल समझता उनका मोल।
रुचिकर लेखन उनको लगता,बोलें जनमानस के बोल।।
गाँधी के नेक विचारों का,बढ़ता था तब नित्य प्रभाव।
देश समर्पण माँग रहा था,कूद पड़ीं उसमें रख चाव।।
बहुभाषाविद ज्ञानी थीं वो,काव्य सृजन का कार्य महान।
जलियांवाला से उर रोया,लौटाया *केसर ए* मान।।
पूर्ण करें कर्तव्य उन्होंने,आंदोलन की थाम लगाम।
भारत कोकिला उपाधि मिली,और अमर है उनका नाम।।

डॉ राजेंद्र प्रसाद

(3 दिसंबर 1884 - 28 फरवरी 1963)

राष्ट्रपति भारत के,थे प्रथम बाबू राजेंद्र।
सादगी मूरत मेंदेश की आशा का केंद्र।।

त्याग सादगी की मूरत में,थे राजेंद्र प्रसाद महान।
नवनिर्माता भारत के थे,प्रथम राष्ट्रपति का सम्मान।
प्रतिभाशाली छात्र रहे जो,बनते शिक्षक और वकील।
सभी मुकदमा जीतें बाबू, देते अद्भुत तर्क दलील।।
भाषाओं के ज्ञानी का था,सादा जीवन उच्च विचार।
पहनावा साधारण सा था, सेवा व्रत जीवन आधार।।
नहीं व्यक्तिगत चाह रखी थी,धन-दौलत का कब था मोह।
गांधी दर्शन का चिंतन कर,जीवन को लेते वो टोह।।
मातृभूमि की सेवा करके,सब के मुख पर दी मुस्कान।
अर्थशास्त्र लिख खादी का,बने देश के रत्न महान।।

जवाहर लाल नेहरू

(14 नवंबर 1889 - 27 मई 1964)

नेहरू चाचा जी,लिख गए आजादी काल।
अग्रणी सेनानी,के पिता थे मोतीलाल।।

भारत माँ के राज दुलारे,अमन शांति की छेड़ें तान।
देश प्रेम का मंत्र फूँक के,पंचशील का गाते गान।।
अचकन में फूल लगा कर के,देते गांधी जी का साथ।
साइमन कमीशन वापस कर,दिए जवाहर अपना हाथ।।
युवा बुद्धिजीवी नेता थे,लोकतंत्र का रखते पक्ष।
नेतृत्व करें आंदोलन का,नेहरू कांग्रेसी अध्यक्ष।।
पत्र लिखा था पुत्री को जब,घर था उनका कारावास।
भारत को नित खोज रहे थे,लिए जवाहर नव इतिहास।।
बाल दिवस में रहें अमर वो,बच्चों के प्रिय चाचा लाल।
आराम हराम समझना सब,उन्नत होगा भारत भाल।।

खुदीराम बोस

(3 दिसंबर 1889 -11 अगस्त 1908)

जंग आजादी की,बोस बलिदानी का नाम।
उम्र छोटी उनकी,फंद जब बनता चिरधाम।।

ताप गुलामी का सहकार वह,जला रहे थे क्रांति मशाल।
शौर्य साहसी बंगाली ले,करता माँ का उन्नत भाल।।
बारूद लिए जो खुद में था,बंग भंग का करें विरोध।
बम फेंका अंग्रेजों पर फिर,और मिटाता अपना क्रोध।।
अल्प आयु में आंदोलन कर,करी पढ़ाई अपनी बंद।
मातृभूमि पर जीवन अर्पण,गीता लेकर चूमे फंद।।
नव युवकों ने धोती पहनी,जिस पर लिखा गया था बोस।
अंग्रेजों को संदेशा दे,उन्हें जताते अपना रोष।।
खुदीराम का नाम अमर है,भारत माँ को होता गर्व।
वीर शहीदों के कारण ही,आया है आजादी पर्व।।

कर्तार सिंह सराभा

(24 मई 1896 - 16 नवंबर 1915)

थे गदर पार्टी के, क्रांतिकारी सिंह कर्तार।
दासता से लड़कर,मृत्यु को करते स्वीकार।।

लुधियाना का जाट सिक्ख थे,सिंह सराभा जी कर्तार।
माता रानी की कोख धन्य,पैदा करके क्रांति विचार।।
शास्त्र रसायन पढ़ने को जब,बाबा भेजें दूर विदेश।
हृदय आव्रजन की पीर सहे,अपमानजनक वह परिवेश।।
भारतीय को दास समझकर,उनसे करते निम्न व्यवहार।
गठन गदर पार्टी का करके, गोरों से लेते प्रतिकार।।
जोशीले भाषण से कहते,दे दो अपनी अंतिम श्वास।
लोग विदेशों से साथ दिए,रखे करतार पर विश्वास।।
राजद्रोह जो उन पर लगता,करें सराभा उस पर गर्व।
सम्मानजनक मृत्यु अपनाकर,सिंह दिए आजादी पर्व।।

राम प्रसाद बिस्मिल

(11 जून 1897- 19 दिसंबर 1927)

काव्य बलिदानी रच,वीरता का ले प्राखर्य।
राम बिस्मिल शायर ,प्राण का लिखते
सौंदर्य।।

मातृभूमि की जय करने को,जन्मा शायर एक महान।
रामप्रसाद सपूत लिखे थे,भारत का आज़ादी गान।।
क्रांतिवीर की कलम चली जब,लेकर कविता में अंगार।
जाग रहे थे भारतवासी,नहीं गुलामी थी स्वीकार।।
झुकते ऐसे शीश कहाँ है,लिए हथेली पर जो प्राण।
तूफानों से कब डरते हैं, इंकलाब से करते त्राण।।
उत्तम तन धारण कर आऊँ,आस यही रख चूमें फंद।
अंत समय की श्वासें भी फिर,गातीं आजादी का छंद।।
उनके सपनों का भारत अब, ढूँढ़े उनके जैसा अन्य।
आत्मकथा लिख आर्य समाजी,भारत माँ को करता धन्य।।

उधम सिंह

(26 दिसंबर 1899 - 31 जुलाई 1940)

क्रांति के वीरों में,थे उधम पंजाबी शेर।
कर्ज था माटी का,फिर किए डायर को ढेर।।

राष्ट्रप्रेम की ज्वाला लेकर,इंकलाब का गाते गान।
हर बच्चा जब उधम सिंह हो,होगा भारत देश महान।।
बेबस चीखें बैसाखी की,जलियांवाला का था घाव।
लहु के आँसू बहते देखें,उधमसिंह पर पड़ा प्रभाव।।
सात समुंदर पार चले थे,लेने माटी का प्रतिशोध।
डायर को फिर मार गिराया,जिसने मारे कई अबोध।।
बीस बरस का बदला लेते,जो जलती सीने में आग।
अमर हुआ यह वीर सिपाही,देशभक्ति का गाकर राग।।
गाँव सुनाम हुआ बड़भागी,उधम सिंह को करे प्रणाम।
मिले मृत्यु से हँसते-हँसते,वीरों को देकर पैगाम।।

अशफ़ाक़ उल्ला खाँ

(22 अक्टूबर 1900 - 19 दिसंबर 1927)

धर्म की एका में,थे सजग उल्ला अशफ़ाक़।
काव्य में भारत रच,सोच खाँ रखते पाक।।

शाहजहाँपुर धन्य हुआ था,धन्य हुआ मुस्लिम परिवार।
वीरोचित गुण लेकर जन्में,उल्ला खाँ लेने अधिकार।।
बचपन से ही लिए प्रेरणा,कभी नहीं सहना अन्याय।
युद्ध कथा सुन बड़े हुए थे,बने वीरता के पर्याय।।
बिस्मिल-उल्ला खाँ की जोड़ी,धर्म अलग पर मत था एक।
आजादी का सपना पाले,मिलकर कार्य करे थे नेक।।
उल्ला खाँ शायर सेनानी,आजादी का लिखते छंद।
अलख जगा अशफाक पिलाते,जाने कितनों को मकरंद।।
काकोरी के सूत्रधार ने,चूमा था जब फांसी फंद।
वतन हुआ आजाद शीघ्र ही,इनके जैसे जन्में चंद।।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी

(6 जुलाई 1901 - 23 जून 1953)

जो मुखर्जी श्यामा,लिख गए भारत इतिहास।
आज पदचिन्हों पर,हम करें चलकर अभ्यास।।

वीर विलक्षण प्रतिभा लेकर,राजनीति में करें प्रवेश।
'देश अखंड रहे' यह मेरा,जनमानस को दे संदेश।।
तुष्टिकरण की नीति-नियम का,किया उन्होंने सदा विरोध।
धर्म बँटा आजादी में जो,परिणामों का होता बोध।।
एक देश दो ध्वज क्यों होंगे,इसका उनको नित था भान।

काशमीर भारत में होगा,नहीं रहेगा धर्म विधान।।
हिंदू पर अत्याचार हुए, उनके मन जन्मा आक्रोश।
दल जनसंघ गठित कर कहते,किसी धर्म से कब है रोष।।
शिक्षाविद चिंतक श्यामा को,याद रखेगा भारतवर्ष।
हिंद उपासक अलख जगाकर,प्राणों का करता उत्कर्ष।।

लाल बहादुर शास्त्री

(02 अक्टूबर 1904 - 11 जनवरी 1966)

लाल शास्त्री जी का,कौन भूला है संघर्ष।
दासता कब भाती,राष्ट्र का ठाने उत्कर्ष।।

पूत पाँव दिखते बचपन में,लाल बहादुर बने मिसाल।
नहीं दासता को स्वीकारें,ऐसे थे भारत के लाल।।
असहयोग आंदोलन करते,देते गांधी जी का साथ।
कद छोटा था पर काम बड़ा,आजादी में उनका हाथ।।
आजादी के बाद किया था,नवभारत का जब निर्माण।
जय जवान का नारा देकर,करें किसानों का कल्याण।।
भौतिकता कब भाती उनको,सादा जीवन उच्च विचार।
सत्य ईमान की मूरत में,देते निर्धन को अधिकार।।
कोटि-कोटि जन के प्यारे थे,भारत संस्कृति के संतान।
ऐसे लाल बहादुर शास्त्री,जिन पर हमको है अभिमान।।

चंद्रशेखर आजाद

(23 जुलाई 1906 - 27 फरवरी 1931)

वीर अंगारों सा,एक आँधी था आजाद।
प्राण थे हाथों में,और वंदे माँ का नाद।।

तेईस जुलाई शुभ दिन था,जन्में थे शेखर आजाद।
गाँव भाबरा धन्य हुआ था,आया उनके घर फौलाद।।
सीताराम तिवारी पितु अरु,माँ जगरानी देवी नाम।
भीलों के सँग बचपन बीता,धनुष बाण से करें प्रणाम।।
उम्र रही जब खेल कूद की,उनका सड़कों पर संघर्ष।
आग जला कर सीने में वह,झेल रहे थे बेंत सहर्ष।।
प्राणों का कब मोह रखे वह,मातृभूमि की सुनें पुकार।
आजाद नाम आजाद रहे,करते भारत की जयकार।।
चौबीस बरस की गाथा जब,लिखती भारत को आजाद।
नाम अमरता लेकर चलती,अनगिन युग रक्खेंगे याद।।

सुखदेव थापर

(15 मई 1907-23 मार्च 1931)

देश आजादी का,स्वप्न ले चलते सुखदेव।
क्रांति चिंगारी ले,मौत से मिलते सुखदेव।।

उदर रिक्त ही रहता उनका,आजादी की जिनको भूख।
इतिहास प्रणाम करें झुक कर,अमर रहा सुखदेव रसूख।।
मातृभूमि भी ऋणी रही है,पाकर के सुखदेव सपूत।
इंकलाब का नारा देकर,जीवन बीता ज्यों अवधूत।।
रक्त प्रवाह बढ़े धमनी में,थापर का जब लेते नाम।
तेईस वर्ष बलिदानी के,लिए शहादत आज ललाम।।
लाला की मौत व्यथित करती,भगत सिंह को देकर हाथ।
राजगुरु संग बदला लेते,और पहनते फंदा साथ।।
आर्य समाज प्रभावित करता,देशभक्ति के बंध अटूट।
सतलज नदिया इतराती है,पाए तीन सिपाही दूत।।

दुर्गा भाभी

(7 अक्टूबर 1907-15 अक्टूबर 1999)

नाम दुर्गा भाभी,बम बना देतीं सहयोग।
कर तिलक वीरों का,चाहतीं आजादी भोग।।

महिला सेनानी नाम अमर,दुर्गा भाभी हैं विख्यात।
इन्हें आयरन लेडी कहते,देतीं गोरों को आघात।।
भगत सिंह की बनकर पत्नी,दुर्गा बदलें अपना भेष।
सहयोग दिया था वीरों को,नहीं मोह प्राणों का शेष।।
हथियार इधर से उधर करें,और बना बम दे संदेश।
भारत को आजादी दो अब,छोड़ चलो यह औपनिवेश।।
पति शोक हुआ था जीवन में,साथी सारे हुए शहीद।
मोंटेसरी प्रशिक्षण ले फिर,बना रही थीं नित्य मुरीद।।
सत्ता सुख कब भोगें दुर्गा,कार्य किया आजादी बाद।
सार्थक दुर्गा नाम करें वह, देश प्रेम का लें उन्माद।।

भगत सिंह

(28 सितंबर 1907- 23 मार्च 1931)

है भगत की गाथा,देशवासी का अभिमान।
भय डरा वीरों से,पूत का देखे बलिदान।।

बात क्रांति वीरों की जब हो,सिंह भगत का नाम महान।
फाँसी फंदा हँस कर चूमें,देश करे उन पर अभिमान।।
पंजाब धरा गौरवशाली,सिख परिवार हुआ था धन्य।
वीर पुरुष को पाकर भारत,गाता अब तक अपने पुण्य।।
हृदय भगत का रोया उस दिन,देखा जलियां नरसंहार।
मार्ग उचित हिंसा का समझे,उर में बदले की अंगार।।
लेख विचारों का दर्पण बन,कहता था उनका व्यक्तित्व।
मजदूरों का शोषण क्यों हो,रहे धर्म का सह अस्तित्व।।
देश प्रेम की अलख जगा लो,छोड़ो अपने सब आराम।
अंतिम संदेश दिए कहते,शेष रहा आजादी काम।।

राजगुरु

(24 अगस्त 1908 - 23 मार्च 1931)

राष्ट्र आजादी का,राजगुरु बनते पर्याय।
प्रीति फंदे से कर,लिख दिया नूतन अध्याय।।

अष्टम वर्ष उन्नीस रहा था,धन्य हुआ था खेड़ा गाँव।
होनहार जन्मा था बालक,हरिनारायण पितु के ठाँव।।
वीर राजगुरु तब गोरों का,नहीं मानते थे कानून।
धर्म ग्रंथ का अध्ययन करते,देशप्रेम का लिए जुनून।।
अल्प आयु थी सोलह की जब,क्रांतिवीर थे इनके मित्र।
रिपब्लिकन से राज जुड़े जब,चंद्र गढ़े तब नव्य चरित्र।।
मौत संग जब ब्याह रचाते,आजादी के गाते छंद।
नहीं शिकन थी मुख पर कोई,जब चूमें फाँसी का फंद।।
स्वर्ण अक्षरों में नाम लिखा,अमर शहादत पर है गर्व।
आज यही सब कारण बनते,आया अमृत उत्सव पर्व।।

अरुणा आसिफ अली

(16 जुलाई 1909 - 29 जुलाई 1996)

क्षोभ मन में पाले,जो अली ने देखा स्वप्न।
ग्रांड आसिफ अरुणा,भूमिगत हो करतीं यत्न।।

एक चमकता तारा आया,नौ उन्नीस हुआ था धन्य।
मास जुलाई सोलह शुभ दिन,जन्मा लेकर भाव अनन्य।।
कांग्रेसी नेता आसिफ से,करती अरुणा प्रेम विवाह।
कूद पड़ीं फिर कर्म युद्ध में,लेकर आजादी की चाह।।
भारत छोड़ो आंदोलन में,ध्वज कांग्रेस लिया जब थाम।
गोरों का अत्याचार सहा,फिर भी थामें रहीं लगाम।।
छुप-छुप कर वह कार्य करें थीं,नहीं चाहतीं फिर हो कैद।
इंकलाब का संपादन कर ,सदा रहीं थी वह मुस्तैद।।
पद्म विभूषण भारत रत्न,महापौर बन करें विकास।
पत्र पेट्रियट की निष्ठा ही,उनके उर में करती वास।।

राम मनोहर लोहिया

(23 मार्च 1910 - 12 अक्टूबर 1967)

देश के चिंतन में,लोहिया जीवित हैं आज।
पक्षधर शुचिता के कर्म के मंथन में आज

कुछ लोग मरा कब करते हैं,सोच अमर करती है नाम।
राम मनोहर समाजवाद को,जन-जन करता नित्य प्रणाम।
राष्ट्रवाद के प्रखर प्रणेता,नित्य सुधारें देश समाज।
कर्म अनुसरण कर कितनों ने,अब भी पहना सिर पर ताज।।
आजादी के आंदोलन में,योगदान भूला है कौन।
जनमानस में भेद मिटाने,कर्म करें वह रहकर मौन।।
मतभेद जवाहर से होता,सप्त क्रांति की उनकी नीति।
ऐसा जग बन जाए फिर,जिसमें पलती पल-पल प्रीति।।
राजनीति की शुचिता में वो,अपनों का भी करें विरोध।
अनगिन स्मारक आज खड़े हो,नित्य कराते सबको बोध।।

पार्बती गिरि

(19 जनवरी 1926 - 17 अगस्त 1995)

ओडिशा टेरेसा,पार्बती गिरि जिनका नाम।
उम्र ग्यारह से वो,देशहित में करतीं काम।।

ओडिशा की मदर टेरेसा,पार्बती गिरि नाम महान।
अल्प आयु में देशभक्ति से,बचपन भी करता अभिमान।।
चाचा और पिता का उनपर,ऐसा पड़ता गहन प्रभाव।
छोड़ पढ़ाई कूद पड़ी थीं,आंदोलन का रखकर चाव।।
सरकार विरोधी नारों में,मिलता उनको कारावास।
नाबालिग नादान उम्र भी,नहीं रोकती अथक प्रयास।।
एक अनाथालय खोला जब,किया समाज हेतु फिर कार्य।
ओडिशा की मदर टेरेसा,बनती सेवा की पर्याय।।
कितनों का जीवन बदल दिया,बनीं प्रेरणा की वह स्त्रोत।
ऐसी सेनानी भारत की,जला गई जो अद्भुत ज्योत।।

वंदेमातरम

शस्य श्यामल हो धरा ये,स्वप्न पलते कोटि दृग में।
फिर अमरता चाहती है,लक्ष्य लिखना सत्य पग में।।
हाथ थामें कीर्ति ध्वज जब,हो शिखर भी पाँव में ।
विश्व गुरु बनना हमें है, इस ध्वजा की छाँव में ।।

भारत की स्वाधीनता में असंख्य वीरों ने पूरी शक्ति के साथ संघर्ष किया और अद्वितीय बलिदान देकर देशभक्ति का इतिहास रचा और आज हम अमृत महोत्सव मना रहे हैं।हम भारतीयों का कर्त्तव्य है इसका चिंतन मनन कर अपनी आजादी को अक्षुण्ण रखें और विश्व गुरु बनें।

जयहिंद

© अनिता सुधीर आख्या